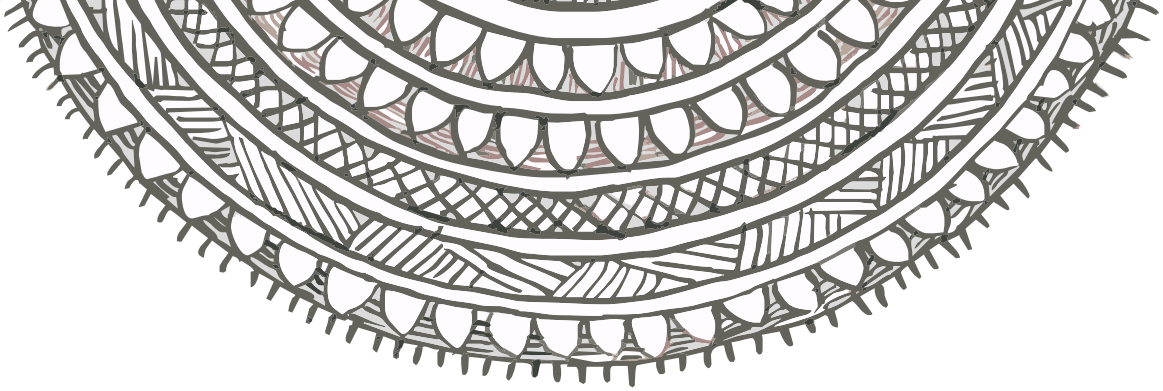

एकलव्य

शायद हम में से हर किसी ने कभी न कभी यह सोचा होगा कि काश स्कूली पढ़ाई बच्चों के लिए एक बोरियत भरा बोझ न होकर जीवन भर सीखने में सक्षम बनाने वाले विविध अनुभवों का सिलसिला होता। एकलव्य पिछले तीन दशकों से इसी सपने को हर बच्चे के लिए साकार करने के प्रयास में जुटा है।

एकलव्य का गठन 1982 में एक गैर-सरकारी संस्था के रूप में हुआ था। यह शिक्षा के रास्ते सामाजिक बदलाव के उद्देश्य से काम करती है और शैक्षिक शोध और नवाचार के ज़रिए शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन के मॉडल विकसित करने और उन्हें बड़े पैमाने पर लागू करने के प्रयास करती है।

अपनी जननी संस्थानों - किशोर भारती, बनखेड़ी व फ्रेंड्स रूरल सेंटर, रसूलिया - से एकलव्य को होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम के अकादमिक संचालन और विकास की ज़िम्मेदारी विरासत में मिली थी। इस काम के साथ-साथ ही एकलव्य ने माध्यमिक कक्षाओं के लिए नवाचारी सामाजिक अध्ययन शिक्षण कार्यक्रम और प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (प्राशिका) का विकास किया। शैक्षिक शोध और पाठ्यचर्या विकास की दिशा में हाल के वर्षों में एकलव्य ने राष्ट्रीय शैक्षिक शोध एवं अनुसंधान परिषद् के साथ काम किया है और बिहार, छत्तीसगढ़, राजस्थान, केरल व आंध्र प्रदेश के राज्य शैक्षिक शोध एवं अनुसंधान परिषदों के साथ काम कर रही है। एकलव्य में प्राथमिक व माध्यमिक स्तर के लिए भाषा व गणित और उच्च माध्यमिक स्तर के लिए विज्ञान व सामाजिक अध्ययन विषयों पर जारी शोध और अध्ययन से इस काम को बल मिलता है। शिक्षकों की शिक्षा एक और दायरा है जिसमें शोध, सामग्री निर्माण व शिक्षक उन्मुखीकरण कार्यशालाओं के ज़रिए एकलव्य काम करता है।

मध्य प्रदेश के पाँच ज़िलों के 110 गाँवों में पहली पीढ़ी के स्कूल जाने वाले बच्चों के लिए समुदाय के साथ मिलकर एकलव्य 185 शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र चलाता है। ये केन्द्र इन बच्चों को ज़रूरी शैक्षिक माहौल व मदद उपलब्ध कराने के साथ-साथ क्षेत्र के सरकारी स्कूलों में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में गुणात्मक सुधार लाने के प्रयास भी करते हैं। मध्य प्रदेश के लगभग 50 सरकारी माध्यमिक स्कूलों में बच्चों द्वारा संचालित पुस्तकालय भी चलाए जा रहे हैं।

अपने शैक्षिक सोच और अनुभवों को लोगों से साझा करने के उद्देश्य से एकलव्य तीन नियमित पत्रिकाओं और किताबों का प्रकाशन व वितरण करती है। हिन्दी व अँग्रेज़ी में प्रकाशित इस सामग्री में बाल साहित्य, गतिविधि की किताबें व चार्ट, पाठ्यचर्या से जुड़े मॉड्यूल, शैक्षिक ग्रंथ, शिक्षकों के लिए स्रोत सामग्री और शैक्षिक शोध पर आधारित रपट आदि भी शामिल हैं। पिछले वर्षों में हमने मराठी, बांग्ला और उर्दू के साथ ही बुन्देली, मालवी, गोंडी और कोरकू भाषाओं में भी बाल साहित्य का प्रकाशन किया है। हमारी कोशिश रहती है कि यह सामग्री आम पाठकों के जीवन अनुभवों और परिवेश के करीब हो और इनके दाम उनकी पहुँच में हों।

भारत भर के अन्यान्य प्रकाशकों व संस्थानों द्वारा तैयार की गई बेहतरीन बाल साहित्य और शैक्षिक सामग्री को पाठकों तक पहुँचाने के उद्देश्य से एकलव्य ने पिटारा नाम से बाल साहित्य व गतिविधि केन्द्रों की एक श्रृंखला शुरू की है।

एकलव्य के काम के इस ताने-बाने को करीब से जानने के लिए आप हमारे भोपाल, होशंगाबाद, हरदा, पिपरिया, शाहपुर, देवास, उज्जैन, या इन्दौर केन्द्रों में आ सकते हैं। और जानकारी के लिए देखें www.eklavya.in, या लिखें info@eklavya.in पर।

चित्रकथाएँ

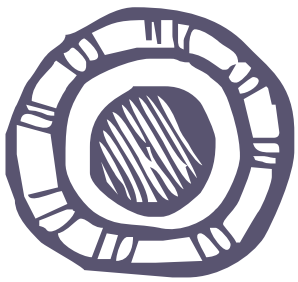

पठनशील समाजों में किताबों के साथ दोस्ती के पहले पायदान पर मिलती हैं चित्रकथाएँ। छोटे बच्चे, जो पढ़ नहीं पाते या जो पढ़ना सीख रहे हैं, उन्हें वही किताब भाती है जिसमें बड़े और सुन्दर चित्र हों। बड़े आकार के अक्षर पढ़ना सीखने में सहायक होते हैं। इस दृष्टि से चित्रकथाएँ और चित्रकविताएँ बहुउपयोगी माध्यम हैं। शुरुआत बच्चों को चित्र दिखाकर, कहानी पढ़कर सुनाते हुए करें। धीरे-धीरे वे चित्रों से अपनी कहानी गढ़ने लगेंगे। और खुद फिर किताब पढ़ने का आनन्द भी लेने लगेंगे।

किताबों से दोस्ती की शुरुआत

नन्हों को सुनने-सुनाने के लिए खास चित्रकथाएँ। इन कहानियों के पात्र बच्चों को खूब भाते हैं। चुलबुलेपन से भरी कहानियों के चित्रों को देखकर बच्चा खुद भी कहानी गढ़ सकता है।

हाथी और बकरी की दोस्ती की दास्तान। वे दोनों मिलकर एक चिड़िया की जान बचाते हैं और फिर तीनों दोस्त बन जाते हैं। एक सरल, सरस कहानी। चित्रों में रंग भरने की छूट भी।

तीन साथी

कहानीः घनश्याम तिवारी
चित्रः सौम्या मेनन
आकारः 5.5" x 4.0"
पृष्ठ संख्याः 12

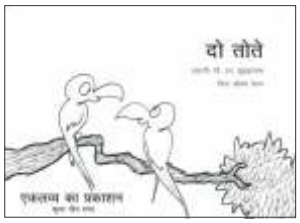

प्रकृति में जो कुछ है वह सभी का साझा है। बन्दर समझता है कि सारे आम उसके हैं। दोनों तोते समझदार हैं, वे बन्दर का दिल जीत लेते हैं।

दो तोते

कहानीः सी.एन. सुब्रह्मण्यम
चित्रः सौम्या मेनन
आकारः 5.5" x 4.0"
पृष्ठ संख्याः 6

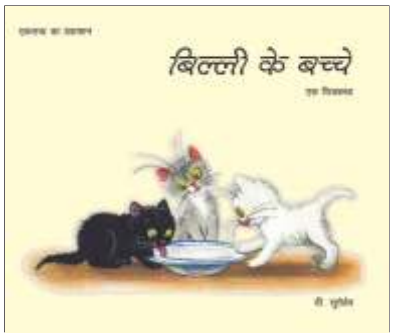

बिल्ली के तीन बच्चे हैं, एक काला, एक भूरा और एक सफेद। वे कभी चूहे के पीछे भागते हैं तो कभी मेंढक के पीछे। हर बार ऐसा कुछ होता है कि उनका रंग बदल जाता है। एक रोचक कहानी जो अनायास ही रंगों की ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करती है।

बिल्ली के बच्चे

चित्र एवं कहानीः
वी. सुतेयेव

ISBN: 978-81-89976-08-8

आकारः 8.5" X 7.0"
पृष्ठ संख्याः 16

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
The Three Kittens
ISBN: 978-81-89976-07-1
और बड़े आकार (11" x 17") में
ISBN: 978-81-89976-67-5

मेंढक को अपनी तैराकी पर गुमान था। उसके दोस्त चूज़ा, चूहा, चींटी और गुबरैला को तो तैरना नहीं आता था। फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी, तरकीब लगाई और एक नाव बनाई। एक अनोखी नाव!

नाव चली

चित्र एवं कहानीः
वी. सुतेयेव

ISBN: 978-81-87171-92-8

आकारः 8.5" X 7.0"
पृष्ठ संख्याः 10

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
The Boat
ISBN: 978-81-89976-29-3

हर काम अपने दोस्त की तरह करने की सहज बाल-प्रवृत्ति पर आधारित एक प्यारी चित्रकथा।

मैं भी...

चित्र एवं कहानीः
वी. सुतेयेव

ISBN: 978-81-87171-90-4

आकारः 8.5" X 7.0"
पृष्ठ संख्याः 10

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
Me Too...
ISBN: 978-81-89976-93-4

दोस्ती का क्या कहना! पल में तकरार तो पल में नोक-झोंक, फिर तुरन्त ही सब भूलकर खेल में खो जाना। चंचल बिट्टू और नटखट बिट्टी की चुलबुली सी कहानी। जिसमें झलकेगा दोस्ती का यही मिज़ाज।

एक थी बिट्टी एक था बिट्टू

कहानीः पारुल बत्रा
चित्रः शिवेन्द्र पाण्डिया
ISBN: 978-81-89976-99-6
आकारः 9.5" X 7.0"
पृष्ठ संख्याः 24

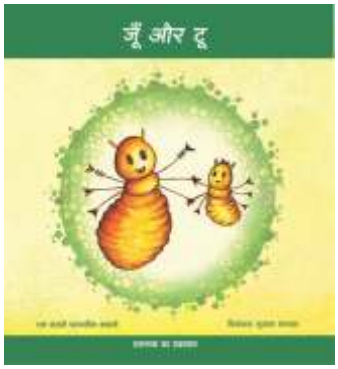

छुटकी टू के हर सवाल का जवाब माँ के पास था, पर एक सवाल का जवाब खुद टू के पास ही था। छोटे बच्चे द्वारा परिवेश और खुद को जानने की कोशिश को सामने लाती है जूँ और टू। इसे चित्रों ने सजीव कर दिया है।

जूँ और टू

मराठी से हिन्दी अनुवादः
माधव केलकर
चित्रः सुजाता भागवत
ISBN: 978-93-81300-02-2
आकारः 7.76" X 8.26"
पृष्ठ संख्याः 12

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
Oo & Too
ISBN: 978-93-81300-03-9
और मराठी में
ISBN: 978-93-81300-04-6

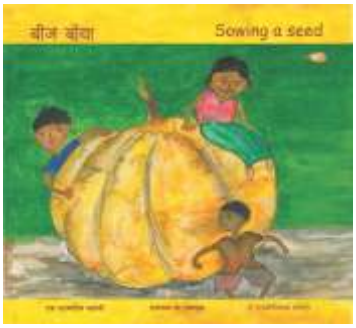

नन्हा-सा बीज किस तरह से बड़ा होता है और उसमें फूल और फल आते हैं। यह प्रक्रिया बच्चों में बड़ा कौतूहल जगाती है। उन्हें पौधों से रूबरू कराती है ये चित्रकथा। हिन्दी और अँग्रेज़ी में एक साथ होने से बच्चा दोनों ही भाषाओं से एक साथ संवाद कर पाता है।

बीज बोया

मराठी से हिन्दी अनुवादः
माधव केलकर
चित्रः श्रद्धा किरकिरे
ISBN: 978-93-81300-00-8
आकारः 8.26" X 7.76"
पृष्ठ संख्याः 16

मराठी-अँग्रेज़ी में
भी उपलब्ध
Sowing a seed
ISBN: 978-93-81300-01-5

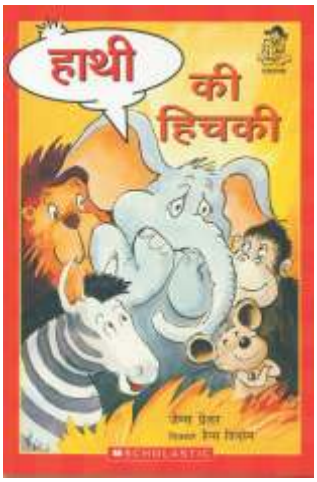

सब जानवर सो रहे हैं... हाथी को छोड़कर। उसे हिचकी आ रही है। उसके दोस्त उसे उपाय बताते हैं। वह आज़माता है... एक के बाद एक। फिर हिचकी का क्या होता है?

हाथी की हिचकी

कहानीः जेम्स प्रेलर

अनुवादः पूर्वा वर्मा

चित्रः हैन्स विलहेम

ISBN: 978-81-7655-674-3

आकारः 6" X 9"

पृष्ठ संख्याः 32

स्कॉलास्टिक के साथ सह-प्रकाशन

पढ़ना शुरू करने के लिए 18 किताबों का सेट

चित्रकथाएँ, जिनमें बच्चों और बचपन की अलग-अलग बातों को दर्शाया गया है। इन चित्रकथाओं में नई चीज़ों को पाने की इच्छा, खेल का मज़ा, भाई-बहनों के बीच का रिश्ता, आसपास की दुनिया को देखना... सभी कुछ है। एक-एक लाइन की कहानियाँ, जिन्हें बच्चे सुनकर और पढ़कर दोनों ही तरीकों से मज़ा लेंगे। साथ ही बोलते हुए चित्र बच्चों को अपनी खुद की नई कहानियाँ गढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे। हिन्दी व अँग्रेज़ी की ये द्विभाषी किताबें दोनों भाषा से परिचय कराएँगी।

18 किताबों के इस सेट को भाषा और अवधारणा के स्तर पर तीन खण्डों में बाँटा गया है। लिपि से अपरिचित बच्चों से लेकर लिपि से वाकिफ बच्चे और बच्चों में रुचि रखने वाले बड़े – सभी इनका आनन्द ले पाएँगे।

कहानीः अरुणा ठक्कर

चित्रः राव बेल

आकारः 5.2" X 5.5"

पहले स्तर की पीली पुस्तिकाएँ

पृष्ठ संख्या: 8

बड़े लोग

Big Folk

ISBN: 978-93-81300-13-8

दरवाज़ा खोलना

Opening the door

ISBN: 978-93-81300-15-2

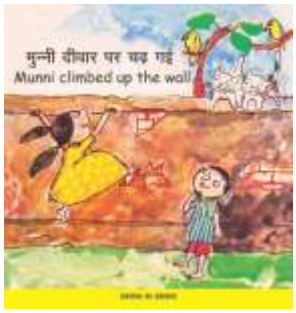

मुन्नी दीवार पर चढ़ गई

Munni climbed up the wall

ISBN: 978-93-81300-16-9

छोटा

Small

ISBN: 978-93-81300-14-5

मैं पतंग उड़ाता हूँ

I fly a kite

ISBN: 978-93-81300-17-6

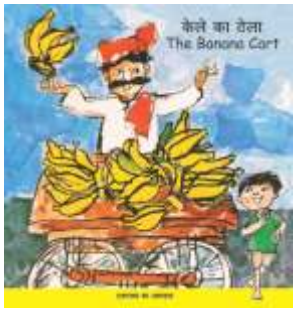

केले का ठेला

The Banana cart

ISBN: 978-93-81300-18-3

दूसरे स्तर की नीली पुस्तिकाएँ

पृष्ठ संख्या: 12

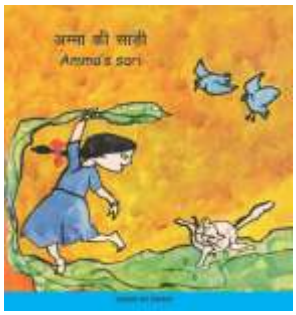

अम्मा की साड़ी
Amma's sari
ISBN: 978-93-81300-30-5

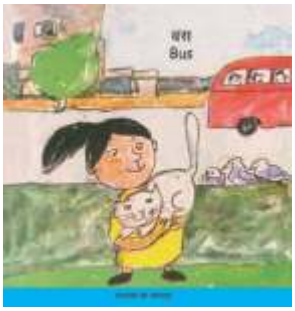

बस
Bus
ISBN: 978-93-81300-26-8

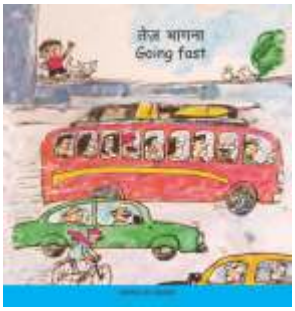

तेज़ भागना
Going fast
ISBN: 978-93-81300-24-4

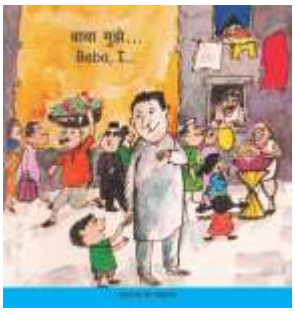

बाबा मुझे...
Baba, I...
ISBN: 978-93-81300-27-5

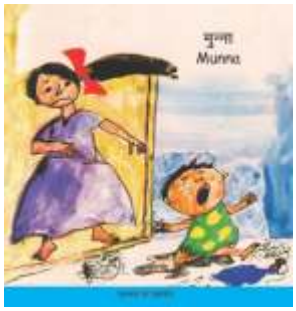

मुन्ना
Munna
ISBN: 978-93-81300-25-1

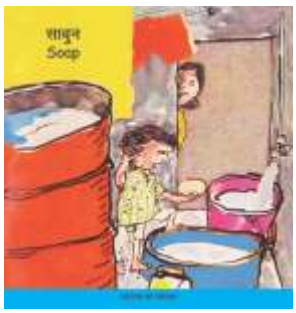

साबुन
Soap
ISBN: 978-93-81300-28-2

पुलिसवाला
Policeman
ISBN: 978-93-81300-29-9

तीसरे स्तर की गुलाबी पुस्तिकाएँ

पृष्ठ संख्या: 16

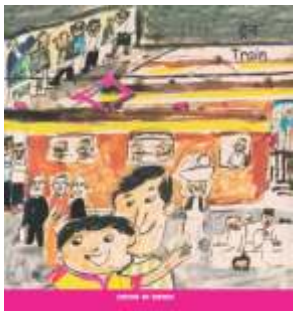

ट्रेन

Train

ISBN: 978-93-81300-19-0

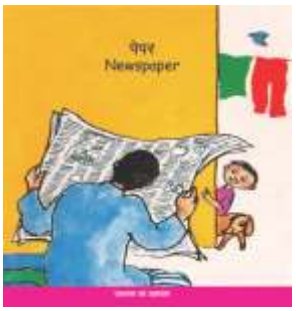

पेपर

Newspaper

ISBN: 978-93-81300-22-0

गेंद डाल

Bowl

ISBN: 978-93-81300-21-3

रोटियाँ

Rotis

ISBN: 978-93-81300-20-6

झूले पर

On the Giant Wheel

ISBN: 978-93-81300-23-7

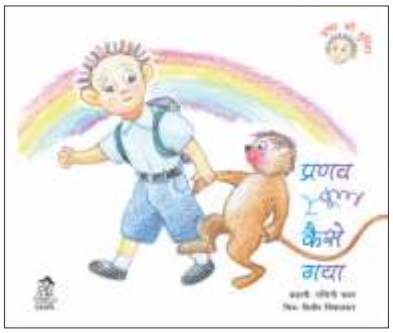

प्रणव को स्कूल जाना है। वह अपने हाथी, बन्दर और बाकी खिलौनों को भी साथ ले जाना चाहता है। घर की परिचित और सुरक्षित दुनिया से बाहर पहला कदम रखने की जद्दोजहद की कहानी। किताब के आखिरी पन्नों में आप कहानी अँग्रेज़ी में भी पढ़ सकते हैं।

प्रणव स्कूल कैसे गया

कहानीः नन्दिनी नायर
अँग्रेज़ी से अनुवादः
शिवनारायण गौर
चित्रः दिलीप चिंचालकर
ISBN: 978-81-89976-53-8
आकारः 8.5" X 7"
पृष्ठ संख्याः 12

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
How Pranav Went to School?
ISBN: 978-81-89976-52-1

प्रणव पहुँच गया है स्कूल। कक्षा में बहुत सारे बच्चे हैं। उनमें से कुछ रो रहे हैं और कुछ सहमे हैं। ये प्रणव के लिए एकदम नया है। क्या महसूस किया प्रणव ने पहले दिन? क्या वो भी रोने लगा?

स्कूल में प्रणव का पहला दिन

कहानीः नन्दिनी नायर
अनुवादः शिवनारायण गौर
चित्रः दिलीप चिंचालकर
ISBN: 978-81-89976-86-6
आकारः 8.5" X 7"
पृष्ठ संख्याः 12

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
Pranav's first day at school
ISBN: 978-81-89976-87-3

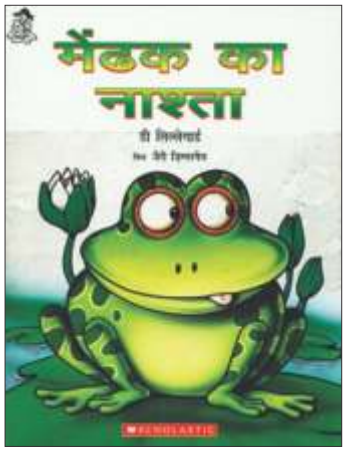

मेंढक को भूख लगी है। उसे कुछ खाने को चाहिए। एक मक्खी उड़ती हुई आती है। उसके पास आकर गुनगुनाती है। और फिर....

मेंढक का नाश्ता

कहानीः डी. लिल्लेगार्ड
अनुवादः अरुंधती देवस्थले
चित्रः जैरी ज़िम्मरमैन
ISBN: 978-81-7655-981-4
आकारः 7.25" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 16
स्कॉलास्टिक के साथ सह-प्रकाशन

नन्हे पाठकों के लिए

किताबों की रंग-रंगीली दुनिया में नन्हें पाठकों का स्वागत है। ये किताबें उन नन्हे-नन्हियों के लिए हैं, जिन्होंने पढ़ना सीख लिया है। वे खुद पढ़कर इन छोटी और मज़ेदार चित्रकथाओं का आनन्द ले सकते हैं। बड़े अक्षरों, छोटे वाक्यों और सुन्दर चित्रों से सजी किताबें...

चाँद सबको प्यारा लगता है। हलीम जानना चाहता था कि चाँद पर क्या कुछ है। पढ़िए हलीम के चाँद पर जाने की रोचक कथा।

हलीम चला चाँद पर

कहानीः सी.एन. सुब्रह्मण्यम
चित्रः प्रिया कुरियन
आकारः 5.5" X 4.0"
पृष्ठ संख्याः 12

चूहे को भूख लगी है। वह खाने के लिए कुछ तलाश कर रहा है... उसे मिलती है एक पेंसिल। चूहा उसे कुतरना चाहता है, मगर पेंसिल चाहती है... बचकर भाग निकलना। पढ़िए वह क्या करती है....

चूहे को मिली पेंसिल

कहानी एवं चित्रः
वी. सुतेयेव
ISBN: 978-81-89976-08-8
आकारः 8.5" X 7"
पृष्ठ संख्याः 12

अँग्रेज़ी में उपलब्ध
The Mouse and the Pencil
ISBN: 978-81-89976-23-1

मुर्गी माँ यह देखकर हैरान है कि बिल्ली उसके नन्हे चूज़े के साथ क्या कर रही है? कहीं खा तो नहीं जाएगी?
मगर चूज़ा अपनी नई दोस्त के साथ खेलने में मस्त है। एक मज़ेदार कहानी और कोलाज शैली के जीवन्त चित्र।

नन्हे चूज़े की दोस्त...

कहानीः रावेन्द्र कुमार 'रवि'
कोलाज एवं सज्जाः कनक
ISBN: 978-81-87171-55-3
आकारः 11.0" X 8.25"
पृष्ठ संख्याः 12

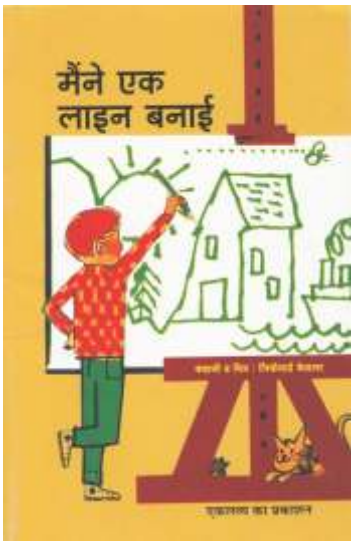

लाइन चलती है, बढ़ती है, घूमती है, चक्कर खाती है, घेरा बनाती है, ऊपर चढ़ती है, नीचे उतरती है.... और भी बहुत कुछ करती है। और इस सबके साथ तरह-तरह के आकार रूप लेने लगते हैं। सम्भावनाओं के द्वार खोलती एक रोचक किताब, जो कहानी भी है और गतिविधि भी।

मैंने एक लाइन बनाई

कहानी व चित्रः लियोनार्ड केसलर
अनुवाद : तेजी ग्रोवर
ISBN: 978-81-87171-74-4
आकारः 5.5" X 8.5"
पृष्ठ संख्याः 60

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
I made a Line
ISBN: 978-81-87171-76-8

ऊपर वाले कमरे से मुर्गी का अण्डा लुढ़ककर सीढ़ियों से नीचे आने लगा। फिर वो लुढ़कता गया, लुढ़कता गया और लुढ़कता ही गया। उसकी खोज में मुर्गी पीछे-पीछे चलती गई, चलती गई और चलती ही गई। रास्ते में उसे जो भी मिला उससे पूछा, "तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा?" क्या उसे अण्डा मिला...?

तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा?

चित्रः कनक
ISBN: 978-81-87171-80-5
आकारः 7" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 24

रूसी ने एक चित्र बनाया... उसकी दोस्त पूसी के लिए एक घर। घर में क्या-क्या चाहिए... यह सब पूसी बताती जाती है... और रूसी बनाती जाती है...। मगर आखिर में पूसी नाराज़ क्यों?

रूसी और पूसी

चित्र एवं कहानीः वी. सुतेयेव
ISBN: 978-81-89976-91-0
आकारः 7" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 12

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
Rusi and Pussy
ISBN: 978-81-89976-24-8

एक दिन नीलोफर की मुस्कान गायब हो गई। उसने हर जगह तलाश की पर मुस्कान कहीं न मिली। फिर नीलोफर ने क्या किया? कैसे लौटी नीलोफर की मुस्कान?

नीलोफर की मुस्कान

कहानीः अक़रम ग़ासेमपोर
अनुवादः शशि सबलोक
चित्रः नसीम आज़ादी
ISBN: 978-81-906971-7-0
आकारः 7" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 24

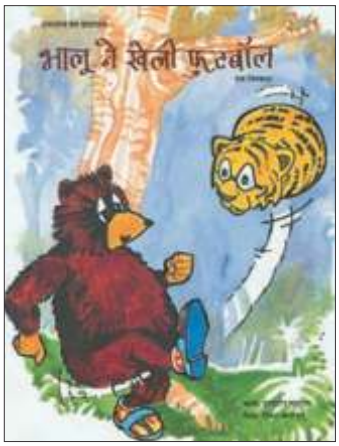

ठण्ड से बचने के लिए शेर का बच्चा गोल-मटोल बन जामुन के पेड़ के नीचे सो रहा था। मगर भालू ने उसे फुटबॉल समझा। पहले थोड़ा खेल हुआ और फिर मुसीबत! अत्यन्त दिलचस्प कथा। कमाल के एक्शन-चित्र।

भालू ने खेली फुटबॉल

कहानीः हरदर्शन सहगल
चित्र तथा आवरणः
रंजित बालमुचु
ISBN: 978-81-87171-28-7
आकारः 7" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 16

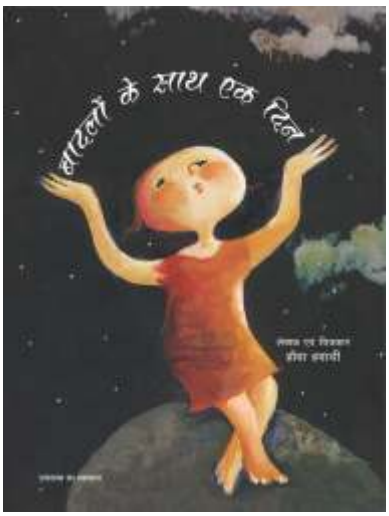

बादलों के ताने-बाने से बुनी हुई दिल को छू लेने वाली कहानी। एक दिन बादल आए, ठहर गए पर बरसे नहीं। दो छोटी लड़कियों ने बादलों से बारिश करवाने के लिए किए जतन, फिर बादल ऐसे झूमे कि उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उम्मीद जगाती इस कहानी के चित्र भी मन मोह लेते हैं।

बादलों के साथ एक दिन

कहानी एवं चित्रः हौदा हदादी
अँग्रेज़ी से अनुवादः
शिवनारायण गौर
ISBN: 978-81-906971-2-5
आकारः 7" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 24

नन्हा बाघा दहाड़ना चाहता है, सबको डराना चाहता है... अपनी माँ की तरह। मगर उससे कोई डरता नहीं। नन्हा बाघा है कौन...?

नन्हा बाघा

कहानी व चित्रः सुपूर्णा सिन्हा
बांग्ला से अनुवादः टुलटुल बिस्वास
कवर डिज़ाइनः राकेश खत्री
ISBN: 978-81-89976-20-0
आकारः 7.25" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 24

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
Little Bagha
ISBN: 978-81-89976-21-7

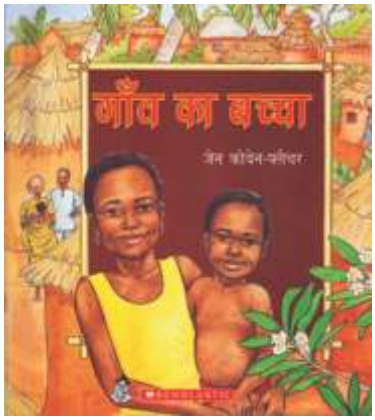

पूरा गाँव लगता है एक बच्चे को पालने में। यह बात येमी को तब समझ में आई जब बाज़ार में वह अपने छोटे भाई को खो देने के बाद फिर पा लेती है। अद्‌भुत चित्रों से सजी एक अफ्रीकी कथा, जो दुनिया के हर गाँव की हकीकत है।

गाँव का बच्चा

कहानी व चित्रः
जेन कोवेन-फ्लैचर
अनुवादः अरुंधती देवस्थले
ISBN: 978-81-7655-907-2
आकारः 8" X 9"
पृष्ठ संख्याः 32
स्कॉलास्टिक के साथ सह-प्रकाशन

Little Bagha

...is a charming book, sure to appeal to children. A child's vivid imagination provides the basis for the events in this stage.

- Sakaal Times

पढ़ने की आदत के लिए

ये चित्रकथाएँ उन शौकीन पढ़ाकुओं के लिए हैं जो किताबों का मज़ा लूटते हुए बढ़ रहे हैं और बढ़ते हुए और पढ़ना चाहते हैं।

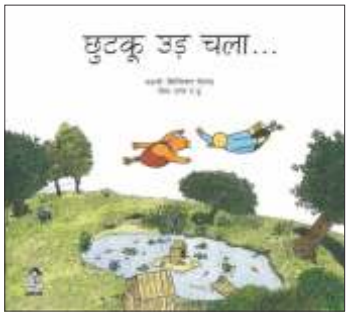

छुटकू पंछी घोंसले में रहते हुए ऊब गया है और देखना चाहता है दुनिया को। जानना चाहता है कि कैसे जीते हैं बाकी। उसका सामना होता है नई-नई बातों से। छोटे बच्चे के मन में दुनिया के बारे में जिस तरह का कौतूहल है छुटकू पंछी उन्हीं को तो जी रहा है।

छुटकू उड़ चला

कहानीः क्रिस्तियान मेरवाई
चित्रः एम्मा द वू
अँग्रेज़ी से अनुवादः दीपाली शुक्ला
ISBN: 978-81-7925-274-1
आकारः 7" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 24
ज्योत्स्ना प्रकाशन के साथ प्रकाशित

धोबी का एक गधा है, नाम है नटखट गधा। उसे नहीं पता कि सरकस क्या होता है। जानने के लिए एक दिन वह घुस जाता है सरकस के तम्बू में। फिर मचती है धमा-चौकड़ी, मगर गधे को सज़ा नहीं मिलती, मिलता है कुछ और....

नटखट गधा

मूलकथाः आचार्य विष्णुकान्त पाण्डेय
चित्रकथा रूपान्तरणः
राजेश उत्साही
चित्रः रंजित बालमुचु
ISBN: 978-81-87171-45-4
आकारः 11" X 8.25"
पृष्ठ संख्याः 16

दो भाइयों के बीच प्रेम और नफरत की कहानी। उनकी नफरत आगे चलकर एक देश को बाँटकर दो मुल्क बना देती है। मगर आखिर जीत तो प्यार की होती है। बढ़ते बच्चों के साथ युद्ध और शस्त्रों की होड़ की निरर्थकता पर संवाद करने का एक प्रयास।

चीचीबाबा के भाई

कहानीः डी. पी. सेनगुप्ता
अनुवादः अरविन्द गुप्ता
चित्रः सुमंत्र सेनगुप्ता
ISBN: 978- 81-87171-42-3
आकारः 11" X 8.25"
पृष्ठ संख्याः 32

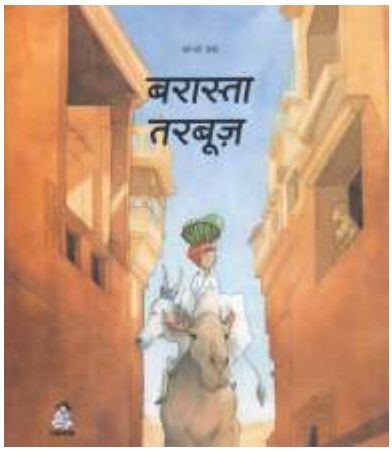

सासौ ने बाज़ार में देखी एक लड़की!और सासौ को हो गया प्यार! वो चल पड़ा अपनी प्रेमिका को तोहफा देने। सासौ के प्रेम के कठिन सफर की खूबसूरत दास्तान है बरास्ता तरबूज़।

बरास्ता तरबूज़

कहानी व चित्रः कॉन्ताँ ग्रेबाँ

अँग्रेज़ी से अनुवादः

शिवनारायण गौर

ISBN: 978-81-7925-273-4

आकारः 8.5" X 9.5"

पृष्ठ संख्याः 24

ज्योत्स्ना प्रकाशन के साथ प्रकाशित

एक अण्डे से जुड़ते हैं कई सपने। उसमें से बतख निकलेगी या चिड़िया, ये कोई नहीं जानता। पर जो भी बाहर आए उसे सब अपनी तरह से पालेंगे ये तो तय है। दोस्तों की दोस्ती और एक छोटे बच्चे से हुए अपनेपन को चित्रों ने मधुर बना दिया है।

हमारा जॉन

कहानीः वेरॉनीक वैं दाँ अबील

अँग्रेज़ी से अनुवादः अमित

चित्रः एम्मा द वू

ISBN: 978-81-7925-275-8

आकारः 9.5" X 8.5"

पृष्ठ संख्याः 24

ज्योत्स्ना प्रकाशन के साथ प्रकाशित

एक आम भेड़िया तब्दील हो गया खूँखार भेड़िए में। कैसे हुआ? क्या किया जो बातों के दौर बढ़ते गए... और साथ ही दहशत भी। थोड़ा, बस थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर कही गई एक रोचक कहानी।

भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं?

कहानी व चित्रः कॉन्ताँ ग्रेबाँ

अँग्रेज़ी से अनुवादः सुमित त्रिपाठी

ISBN: 978-81-7925-272-7

आकारः 8.5" X 9.5"

पृष्ठ संख्याः 24

ज्योत्स्ना प्रकाशन के साथ प्रकाशित

झींगुर गा ना पाए!

जंगल की सुन्दरता देखने के लिए लम्बी यात्रा करके झींगुर जंगल में पहुँचा। रात घिरने पर, उसने जब साज़ थामा और गाना शुरू किया तो अलग-अलग आवाज़ों ने उसके गाने में बाधा डाली। पर अन्त में झींगुर ने मधुर सुर छेड़े और वह गाता रहा... गाता रहा।

कहानीः फरीदा खल्अतबरी
अँग्रेज़ी से अनुवादः सुमित त्रिपाठी
चित्रः अज़िता आरता
ISBN: 978-81-906971-1-8
आकारः 7" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 20

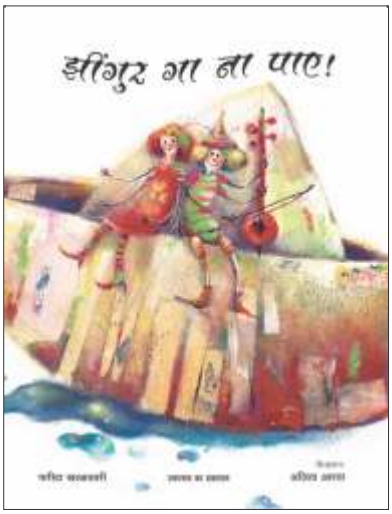

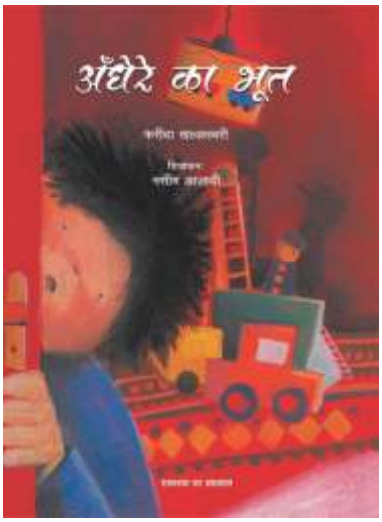

हर छोटी-बड़ी आहट से डर जाता था वो। तभी तो स्कूल के बच्चों ने उसे नाम दिया था, नन्हा चूहा। एक बच्चे के मन में बसे डर, उसके कारण और उससे लड़ने की उसकी कोशिश की कहानी।

अँधेरे का भूत

कहानीः फरीदा खल्अतबरी
अँग्रेज़ी से अनुवादः दीपाली शुक्ला
चित्रः नसीम आज़ादी
ISBN: 978-81-906971-0-1
आकारः 7" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 16

शहंशाह अकबर को कौन सिखाएगा?

अकबर सीखना चाहते हैं, ज्ञानी बनना चाहते हैं। मगर उन्हें सिखाएगा कौन? बीरबल इसका इन्तज़ाम करते हैं, मगर अपने तरीके से.../ तो, शहंशाह अकबर को कौन सिखाएगा?

एक अवेही-अबकस कथा
चित्रः दीपा बलसावर
डिज़ाइनः प्रीति राजवाड़े
अँग्रेज़ी से अनुवादः संध्या गाँधी-वकील व दीपाली शुक्ला
ISBN: 978-81-89976-79-8
आकारः 7" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 12

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
Who will teach Emperor Akbar?
ISBN: 978-81-89976-71-2

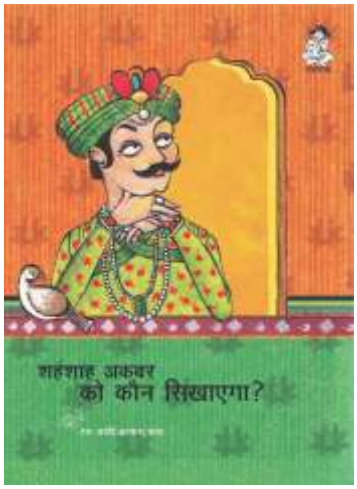

टिंटी कहती है, "मैं तो बिल्ली हूँ!" मगर वह बिल्ली की तरह कुछ नहीं कर पाती। वह माँ की कोई बात नहीं मानती। उसे सारा दिन घर में अकेला रहना पड़ता है, खाना भी नहीं मिलता। शाम को वह फिर टिंटी बन जाती है, अपनी माँ की बेटी! एक कामकाजी बच्ची के जीवन के एक अल्हड़ दिन की झलक।

मैं तो बिल्ली हूँ!

कहानीः रिनचिन
अँग्रेज़ी से अनुवादः सुशील जोशी
चित्रः जितेन्द्र ठाकुर
ISBN: 978-81-89976-66-8
आकारः 8.5" X 7"
पृष्ठ संख्याः 20

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
I am a Cat!
ISBN: 978-81-89976-65-1

छुटकी उल्ली बहुत जिज्ञासु है। वह प्रकृति के रहस्यों को जानना चाहती है.. आसमान की ऊँचाई और समुन्दर की गहराई नापना चाहती है। माँ उसे सिखाती है... खोज करना और पता लगाना।

छुटकी उल्ली

कहानीः माइक थेलर
अँग्रेज़ी से अनुवादः तेजी ग्रोवर
चित्रः कनक
ISBN: 978-81-87171-66-9
आकारः 7" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 12

लद्दाख के एक गाँव में घटी सच्ची कहानी। रिगज़िन की सूझबूझ से हिम-तेंदुआ कैसे बचा गाँववालों के गुस्से का शिकार बनने से, पढ़िए और जानिए।

परबत का प्रेत

कहानीः सुजाता पद्मनाभन
अँग्रेज़ी से अनुवादः टुलटुल बिस्वास
चित्र एवं डिज़ाइनः
मधुवन्ती अनन्तराजन
आवरणः जितेन्द्र ठाकुर
ISBN: 978-81-89976-85-9
आकारः 8.5" X 7"
पृष्ठ संख्याः 28

I Am a Cat!

Tinti is a delightful protagonist and may well become the hero of young readers.

- The Hitavada

बच्चे स्कूल चले गए तो सारे जानवर परेशान हैं। उनके साथ खेलने के लिए कोई नहीं है। वे चल पड़ते हैं शहर की ओर....। पहुँच जाते हैं सार्वजनिक पुस्तकालय। वे कुछ करना चाहते हैं। बारी-बारी सब अन्दर जाते हैं, मगर बात नहीं बनती। फिर क्या होता है?

किताब! किताब! किताब!

कहानीः डेबोरा ब्रुस
अनुवादः अरुंधती देवस्थले
चित्रः टिफानी बीके
ISBN: 978-81-7655-906-5
आकारः 8.5" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 32
स्कॉलास्टिक के साथ सह-प्रकाशन

लोककथाएँ

लोककथाओं में मिट्टी की सौंधी खुशबू और देसीपन का ठाट होता है। ये किताबें लोककथाओं की साझी विरासत को आगे बढ़ाने का प्रयास हैं। इनकी कहानियों को विभिन्न क्षेत्रों में थोड़ा-बहुत फेरबदल के साथ कहा-सुना जाता है। अतः हर क्षेत्र के पाठकों को ये अपनी-सी लगेंगी।

पेड़ क्यों सूखा? इसके जवाब की तलाश किसी पहाड़ी नदी के प्रवाह की तरह तेज़ी से मुड़ते-घुमड़ते काली चींटी तक पहुँचती है। पारम्परिक ओड़िया लोककथा हिन्दी और अँग्रेज़ी भाषा में एक साथ।

ओ हरियल पेड़...

परिकल्पनाः तेजी ग्रोवर

चित्रः रानू टाइटस

ISBN: 978-81-89976-01-9

आकारः 8.5" X 7"

पृष्ठ संख्याः 32

मन के लड्डू खाने के शौकीन पति-पत्नी गाय पालते हैं, मन ही मन। उसका दूध दुहते हैं, मन ही मन। ...और फिर बचे हुए दूध के इस्तेमाल को लेकर झगड़ने लगते हैं, सचमुच में! गोपाल भाण्ड आकर अपनी अक्ल लगाता है और उनकी अक्ल ठिकाने लगाता है। एक रोचक बांग्ला लोककथा द्विभाषी (हिन्दी और अँग्रेज़ी) चित्रकथा के रूप में।

मन के लड्डू

परिकल्पनाः तेजी ग्रोवर

चित्रः रानू टाइटस

ISBN: 978-81-89976-60-6

आकारः 8.5" X 7"

पृष्ठ संख्याः 16

गोण्डी शैली के चित्रों से सजी सुन्दर चित्रकथा के कलेवर में एक जानी-पहचानी लोककथा। खिचड़ी के स्वाद और बिरजू के भुलक्कड़पन की रोचक कहानी।

खिचड़ी...

प्रस्तुतिः जितेन्द्र कुमार
चित्रः दुर्गाबाई व्याम
ISBN: 978-81-89976-79-8
आकारः 7" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 12

बड़े आकार में भी उपलब्ध
(11"x17")
ISBN: 978-81-89976-02-6

एक गीत क्या कमाल कर सकता है। सोचिए...। यह बुन्देली लोककथा आपको बताएगी कि कैसे एक गीत चोरों को भगा देता है। इस किताब में कहानी ही नहीं चित्र भी गजब के हैं।

गीत का कमाल

चित्रः जितेन्द्र ठाकुर
ISBN: 978-81-906971-5-6
आकारः 8.5" X 10.5"
पृष्ठ संख्याः 36

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
What a Song!
ISBN: 978-81-906971-6-3

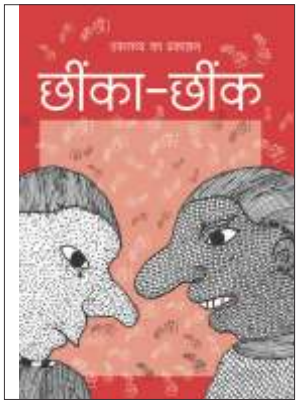

एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम समूह द्वारा संकलित, बच्चों के मुख से बच्चों को सुनाई गई प्यारी-प्यारी कहानियाँ। सुरता की मुलाकात रीछ से होती है... मुर्गा कहता है कुक्कड़ू खूँ, और बड़नक्कू-छुटनक्कू को लग जाती है छींका-छींक! साथ में और भी लुभावनी कहानियाँ।

छींका-छींक

चित्रः मानसिंह
ISBN: 978-81-89976-82-8
आकारः 7" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 36

कहानी सुनने में मज़ा तो आता ही है, साथ ही भाषा सीखने में भी कहानियाँ बच्चों की मदद करती हैं। इस संग्रह में मानसिंह के बनाए सुन्दर चित्रों से सजी प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम समूह द्वारा संकलित मनोरंजक कहानियाँ हैं। ऐसी कहानियाँ जो इन्हें सुनने-पढ़ने वालों को विभिन्न पात्रों में ढल जाने और काल्पनिक स्थितियों में विचरने के खूब मौके देंगी।

अक्ल बड़ी या भैंस!

चित्रः मानसिंह
ISBN: 978-81-89976-81-1
आकारः 7" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 28

खिचड़ी

यह किताब एक ओर मज़ेदार लोककथा के लिए पढ़ी जा सकती है तो दूसरी ओर दुर्गाबाई व्याम के चित्रों के लिए भी।

- हरिभूमि

एक देश है जवाबों का। सवाल आया नहीं कि लोग जवाब ढूँढने में जुट जाते हैं। एक दिन एक ऐसा सवाल आया कि उसने खलबली मचा दी... अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे? फिर शुरू हुआ खोजबीन और दिमाग की आज़माइश का सिलसिला। तो क्या उसे तौल पाए?

अप्पुकुट्टन को तौलें कैसे?

कहानी व चित्रः इन्दु हरिकुमार
अँग्रेज़ी से अनुवादः शशि सबलोक
ISBN: 978-81-89976-83-5
आकारः 11" X 8.5"
पृष्ठ संख्याः 20

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
How do we weigh Appukuttan?
ISBN: 978-81-89976-84-2

पहला घर कैसे बना होगा? इसकी एक कहानी कहती है यह संथाली लोककथा। हाथी से कुछ सीखा, साँप से कुछ, और मछली से कुछ सीखा... फिर बना एक घर। एक रोचक द्विभाषी (हिन्दी और अँग्रेज़ी) चित्रकथा।

पहला घर

पुनर्कथनः जेन साही
अँग्रेज़ी से अनुवादः
शिवनारायण गौर
चित्रः रानू टाइटस
ISBN: 978-81-89976-61-3
आकारः 8.5" X 7"
पृष्ठ संख्याः 16

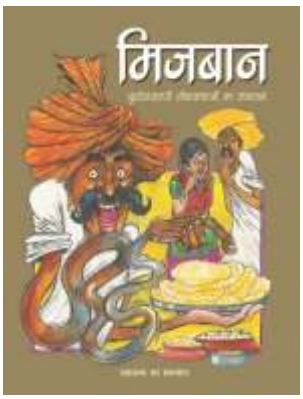

अक्ल के दाँवपेंच, जैसे को तैसा। इन लोककथाओं में हास्य है और लोक-जीवन का दर्शन भी। बुन्देलखण्डी भाषा में कही गई इन कहानियों को उतने ही दिलकश चित्रों ने और मज़ेदार बना दिया है।

मिजबान

संकलन, पुनर्लेखन व सम्पादनः
प्रदीप चौबे, महेश बसेड़िया
चित्र एवं डिज़ाइनः अतनु राय
ISBN: 978-81-89976-48-4
आकारः 7" X 9.5"
पृष्ठ संख्याः 40

मिजबान

लोकगीतों का लोक भाषा में संकलन तो आम बात रही है, मगर लोक भाषा में लोककथाओं का संकलन बहुत कम किया गया है। ऐसे में इस किताब का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। मिजबान जैसे संकलनों का निकालना इसलिए भी ज़रूरी है ताकि लोक-साहित्य के अध्येता इस बात का पता लगाते रहें कि लोककथाएँ एक जगह से दूसरी जगह कैसे संचारित हुईं।

- हरिभूमि

कविताएँ

कविताओं में कल्पना होती है जो बच्चे को एक नई दुनिया में ले जाती है। और होती है सम्भावनाएँ - एक नई दुनिया गढ़ने के सपने देखने की। फिर तरह-तरह की ध्वनियाँ और नित नए बिम्ब बच्चों को भाषा के बहुरंगी संसार से भी जोड़ते हैं। स्कूल न जाने वाले बच्चे भी अपनी भाषा कोश को परिवेश से भरना शुरू कर देते हैं। कविताएँ इस कोश को और समृद्ध करती हैं।

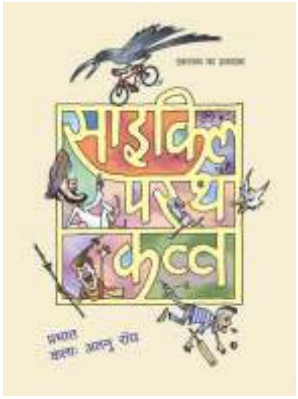

तरह-तरह की ध्वनियों के उतार-चढ़ाव, लम्बे और छोटे शब्द, अलग-अलग लय। इन छोटी-छोटी कविताओं का अलग ही अन्दाज़ है। सजीव चित्रों के साथ तो ये और थिरक उठते हैं। खासकर छह साल से बड़े बच्चों की ज़ुबाँ पर।

साइकिल पर था कव्वा

कविताएँः प्रभात

चित्रः अतनु रॉय

ISBN: 978-81-89976-75-0

आकारः 7"x 9.5"

पृष्ठ संख्याः 20

कविता के माध्यम से भोपाल शहर के एक हिस्से का किस्सा बयाँ करते-करते हमारे आस-पास के पेड़-पौधों की देखभाल की ओर भी ध्यान दिला जाती है यह कविता। यह मूल रूप से चकमक में छपी थी। इसका नाटक के रूप में मंचन किया जा सकता है और इसको बतौर कहानी भी सुनाया जा सकता है।

छुटकी गिलहरी

कविताः विनय दुबे

चित्रः विवेक

ISBN: 978-81-87171-27-0

आकारः 7.75"x 10.5"

पृष्ठ संख्याः 12

कुदरत की पिटारी में रखे हर मौसम की शोखी बिखरी है इस किताब के पन्नों में। मौसम को बच्चों से रूबरू कराती विभिन्न रचनाकारों की इन कविताओं को लय में गाया जा सकता है। अलग-अलग कलाकारों के भिन्न-भिन्न शैली के चित्र आकर्षक हैं।

ऋतुओं का स्कूल

ISBN: 978-81-87171-38-6

आकार: 7.75"x 10.5"

पृष्ठ संख्या: 24

इस संग्रह में समकालीन के साथ ही विविध पारम्परिक चित्र शैलियों से सजी हिन्दी जगत् के कई परिचित रचनाकारों की लम्बी कविताएँ हैं। ये मूल रूप से चकमक में छपी थीं। आठ-नौ साल की उम्र से बड़े बच्चों को इन्हें पढ़ने, गाने और गुनने में रस आएगा। कविता पसन्द करने वाले बड़ों को भी इनका मिज़ाज भाएगा।

बाँकी बाँकी धूप

ISBN: 978-81-87171-00-3

आकार: 7.75"x 10.5"

पृष्ठ संख्या: 36

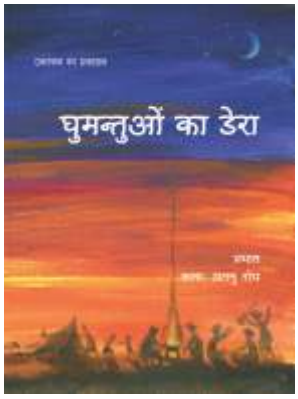

इस संग्रह में है घुमन्तू कविताएँ। घुमन्तू इसलिए कि बादल, हवा, बंजारा ये सब ठहरते नहीं, कुछ क्षण विराम लेते हैं फिर बढ़ जाते हैं आगे और आगे। इन कविताओं में झलकता है जीवन, इसके रंग और आस-उम्मीद। चित्रों ने कविताओं को जीवन्त कर दिया है।

घुमन्तुओं का डेरा

कविताएँ: प्रभात

चित्र: अतनु रॉय

ISBN: 978-81-89976-77-4

आकार: 7.75"x 10.5"

पृष्ठ संख्या: 28

नाम के अनुरूप ही गरजती-बरसती-गड़गड़ाती कविताएँ हैं इस संग्रह में। इनको पढ़ते हुए कुछ ऊटपटांग से सवाल ज़ेहन में आएँगे। हँसेंगे, सोचेंगे और इन कविताओं को गाएँगे-दोहराएँगे।

मेघ की छाया

कविताएँ: प्रभात

चित्र: अतनु रॉय

ISBN: 978-81-89976-76-7

आकार: 7.75"x 10.5"

पृष्ठ संख्या: 20

चुलबुली तुकबन्दियाँ। अद्भुत कल्पनाएँ। संक्षिप्त पर मज़ेदार कविताएँ। छोटे बच्चे इन्हें चटपट याद कर गा सकते हैं। प्राथमिक स्तर पर भाषा सीखने में मददगार।

क्यों जी बेटा रामसहाय

संकलनः तेजी ग्रोवर
चित्रः रानू टाइटस
ISBN: 978-81-87171-86-7
आकारः 8.5"x 5.5"
पृष्ठ संख्याः 40

टेसू जी की कविता में छिपे हैं कुछ सरल से सवाल। और जवाब छिपे हैं चित्रों में। नई-नई गिनती सीखने वालों के लिए कविता और खेल संग गिनती भी। जितनी बच्चों को भाएगी उतनी ही शिक्षकों और अभिभावकों को भी।

टेसू राजा बीच बज़ार

कविताः निरंकार देव सेवक
चित्रः रानू टाइटस
ISBN: 978-81-89976-12-5
आकारः 10.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्याः 20

दो पंक्तियों की कुछ अजूबा सी पर खूबसूरत कविताएँ। इनको खिलौनों की तरह उपयोग किया जा सकता है। परिवेश को नई दृष्टि से देखने का ढंग दिखलाती ये कविताएँ ताज़गी भरी हैं।

दूध जलेबी जग्गग्गा!

संकलनः तेजी ग्रोवर
चित्रः रानू टाइटस
ISBN: 978-81-87171-84-3
आकारः 8.5"x 5.5"
पृष्ठ संख्याः 40

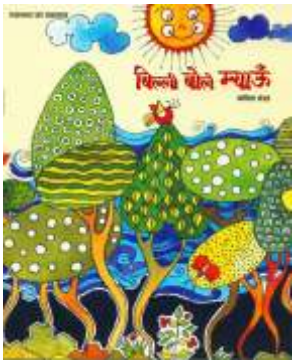

इन कविताओं में किस्से-कहानियाँ हैं, अनेक तरह के रंग हैं... वह सब कुछ है जो प्राथमिक स्तर के बच्चों को भाषा की दुनिया की ओर आकर्षित करता है। इन कविताओं को हावभाव के साथ गाया भी जा सकता है।

बिल्ली बोले म्याऊँ

ISBN: 978-81-87171-02-7
आकार: 6.5"x 8.25"
पृष्ठ संख्या: 36

मालवी भाषा के शब्दों के साथ बुनी गई थोड़ी-सी लम्बी कविता। एक-दूसरे से ऊँचा होने की होड़ में नाना-नानी ने किन-किन चीज़ों का सहारा नहीं लिया। नानी चढ़ी मकान पर तो नाना चढ़े पहाड़। फिर नानी ऐसी जगह चढ़ी कि नाना पा न सके पार। शब्दों की पुनरावृत्ति शब्द भण्डार को समृद्ध बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

नाना-नानी

कविता: घनश्याम तिवारी
चित्र: धनंजय
ISBN: 978-81-87171-87-4
आकार: 8.5"x 7.25"
पृष्ठ संख्या: 12

लहरों में मचलती नाव, पास आती बैलों की गाड़ी, फूलों पर मँडराती तितली, नाचती कठपुतली.... तरह-तरह की कविताएँ। जिनके सिरे जुड़े हैं ज़िन्दगी से, परिन्दों से, नटखट बचपन से।

धूप खिली है हवा चली है

कविताएँ: प्रयाग शुक्ल
चित्र: तापोसी घोषाल
ISBN: 978-81-89976-58-3
आकार: 9"x 7"
पृष्ठ संख्या: 20

हाइकू यानी जापानी शैली की छोटी कविताएँ। हाइकू वो सब कुछ है जिसे आप महसूस करते हैं। यह कोई दृश्य, मौसम की विशेष बात या आसपास के परिवेश की सामान्य घटना भी हो सकती है। इस किताब में मूल जापानी हाइकू को अँग्रेज़ी से हिन्दी में अनूदित किया गया है।

आपके जापानी हाइकू

संचयन: तेजी ग्रोवर
चित्र: रानू टाइटस
ISBN: 978-81-87171-79-9
आकार: 8.5"x 5.5"
पृष्ठ संख्या: 32

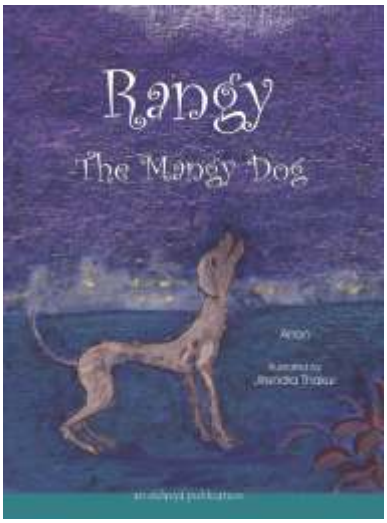

It's a winter night. The misty moonlight feels like snow. How does a street-dog fight the cold? It sings!

This simple poem book is meant for early readers and all dog lovers.

Rangy - The Mangy Dog

Anon

Illustration: Jitendra Thakur

ISBN: 978-93-81300-11-4

Dimensions: 7"x 9.5"

Pages: 12

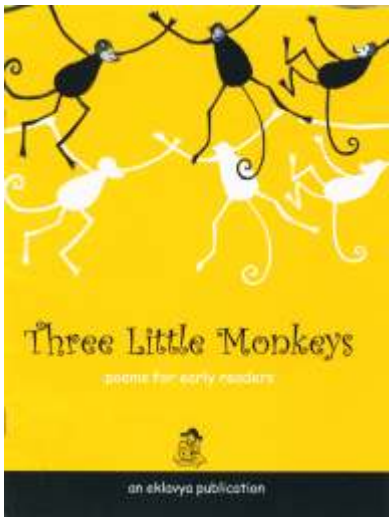

Children learn language from familiar contexts. All the poems of this collection encourage children to play with sounds and meanings of various words in a familar and fun-filled context.

Three little monkeys

Compilations: Ruth Rastogi and Anjali Noronha

Illustration: Kanak

ISBN: 978-81-87171-98-0

Dimensions: 7"x 9.5"

Pages: 24

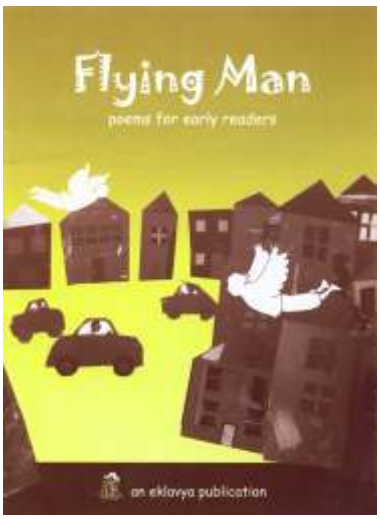

A collection of rhythmic poems for children above 3 years age. All the poems are simple and easy to sing and play-act. Useful for teachers as a bank of activity ideas for language teaching and learning.

Flying Man

Compilation: Ruth Rastogi and Anjali Noronha

Illustration: Kanak

ISBN: 978-81-87171-99-7

Dimensions: 7"x 9.5"

Pages: 28

बड़ों द्वारा बच्चों के लिए लिखी गई चकमक में प्रकाशित कविताएँ। इन्हें पढ़ते हुए बच्चों को ये अपनी सी लगेंगी।

नई सवारी

ISBN: 978-81-87171-30-0
आकार: 3.5"x 5.5"
पृष्ठ संख्या: 12

मन करता है चिड़िया बनकर
चीं-चीं चूँ-चूँ शोर मचाऊँ...
आ आ आक छूँ.../ ध्वनियों के साथ-साथ शब्दों का उतार-चढ़ाव छोटे बच्चों को भाषा के कई आयामों से जोड़ेगा। चकमक में प्रकाशित कविताओं का संकलन।

फर फर फर उड़ी पतंग

ISBN: 978-81-87171-19-5
आकार: 3.5"x 5.5"
पृष्ठ संख्या: 12

खेल-गीत

कविता की दुनिया में बाल अभिव्यक्ति का पहला कदम है खेल-गीत। इसमें खेल भी है और गीत भी। यानी गाते हुए खेलना। ये सोच समझकर नहीं बल्कि मज़े-मज़े में यूँ बन जाते हैं और फिर तुरन्त ही सबकी ज़ुबान पर चढ़ जाते हैं।

थोड़ी कल्पना और कुछ वास्तविकता, बन गया खेल-गीत। इनमें कभी तुक होती है और कभी नहीं भी होती। यही तो बच्चों द्वारा रचे गए साहित्य की एक खूबसूरती है। पर इसमें मिठास खूब होती है जो पढ़ने वालों को तुरन्त इनसे जोड़ देती है।

अक्कड़-बक्कड़

संकलनः मनोज साहू 'निडर'

चित्रः प्रीति सलूजा

ISBN: 978-81-87171-64-5

आकारः 8.5"x 5.25"

पृष्ठ संख्याः 48

खेल-गीतों का ज़िक्र आते ही बच्चों के साथ-साथ बड़े भी अपने बचपन में लौट जाते हैं। खेल-गीतों से कोई न कोई घटना ताज़ा हो आती है। इन गीतों को गुनगुनाने का मज़ा ही अलग है।

एक दो दस

संकलनः मनोज साहू 'निडर'

चित्रः बोस्की जैन

ISBN: 978-81-906971-3-2

आकारः 8.5"x 5.25"

पृष्ठ संख्याः 28

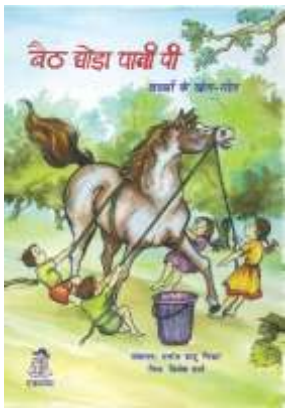

बचपन में खेले गए खेल और उनके गीत... भात एकम् भात या गुरुजी नमस्ते पान खाओ सस्ते या फिर अटकन चटकन दही चटाका। पढ़ना शुरू कर रहे बच्चों का भाषा कोश ऐसे गीतों से विस्तार पाता है और कक्षा में सामूहिक गतिविधि के ज़रिए शब्दों से दोस्ती भी जल्द हो जाती है।

बैठ घोड़ा पानी पी

संकलनः मनोज साहू 'निडर'

चित्रः विवेक वर्मा

ISBN: 978-81-87171-83-6

आकारः 7"x 9.5"

पृष्ठ संख्याः 32

बच्चों की कलम से

कुछ कहानियाँ, कुछ कविताएँ। जिन्हें बच्चों ने लिखा है। बच्चों की रचनाओं में झलकता है उनका दृष्टिकोण। आसपास की दुनिया का गहरा अवलोकन। और ऐसी सरलता जो पढ़ने वालों को सहज ही आकर्षित कर ले। बाल साहित्य में बच्चों की रचनाओं को अक्सर बहुत कम स्थान मिलता है। हमारी कोशिश रही है कि बच्चों की रचनात्मकता को माकूल जगह दी जाए क्योंकि बच्चों को केवल कविताएँ और कहानियाँ सुनाना, पढ़ने देना ही पर्याप्त नहीं है। उनकी अभिव्यक्ति को मंच देना भी उतना ही आवश्यक है।

कविताएँ

बच्चों के विचारों में अनगिनत चीज़ें होती हैं। जिन्हें कविता के रूप में इस किताब में समेटा गया है। इनमें बचपन की मौज-मस्ती ही नहीं, गहरी सोच भी झलकती है। चित्र भी बच्चों ने ही बनाए हैं।

हमको फिर छुट्टी

ISBN: 978-81-87171-11-9
आकार: 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्या: 28

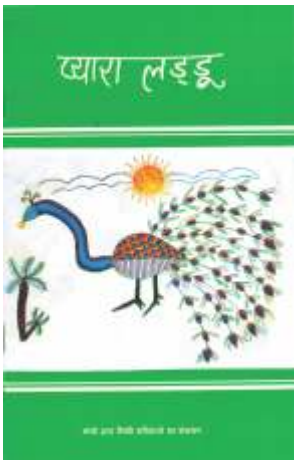

नन्हे कवियों की खास रचनाएँ। इनमें लय और लचक के साथ-साथ व्यापक नज़रिया भी है। कविताओं को नन्हे चितेरों द्वारा बनाए चित्रों ने खूबसूरती दी है।

प्यारा लड्डू

ISBN: 978-81-87171-06-5
आकार: 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्या: 36

कहानियाँ

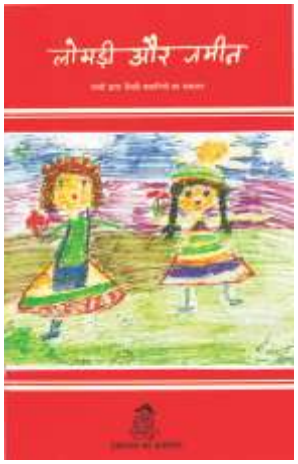

अपनी भाषा में बात कहने का मज़ा! बिना किसी घुमाव के घटना का सटीक वर्णन। बच्चों की ताकत यही है। बच्चों की कलम से निकली अलग-अलग तरह की कहानियाँ।

लोमड़ी और जमीन

ISBN: 978-81-87171-07-2

आकार: 5.5”x 8.5”

पृष्ठ संख्या: 48

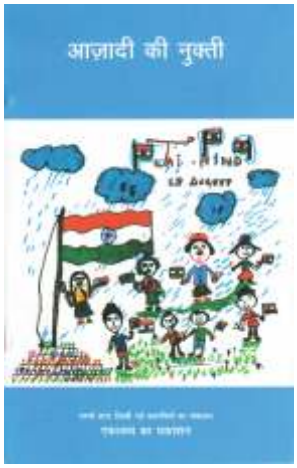

पहली बार साइकिल चलाने पर मिली चोट की मीठी-सी पीड़ा को कहने की साफगोई और अन्धविश्वास को तोड़ने का अनजाना साहस भी। इन कहानियों को बच्चों ने लिखा और चितेरा है।

आज़ादी की नुक्ती

ISBN: 978-81-87171-12-6

आकार: 5.5”x 8.5”

पृष्ठ संख्या: 48

नाटक... बच्चों के लिए

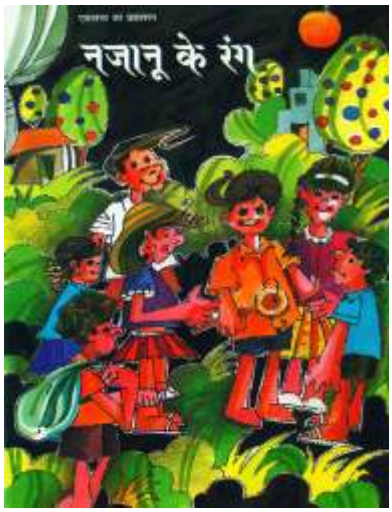

नजानू लिखना चाहता है कविता, बनाना चाहता है चित्र, बजाना चाहता है साज़... पर वह निकला गणित में उस्ताद। बच्चों के आपसी रिश्तों के ताने-बाने को दर्शाते लोकप्रिय रूसी पात्र नजानू की कहानियों के चार नाट्य रूपान्तर। इतने सहज और सरल कि बच्चे आसानी से मंचन कर सकते हैं।

नजानू के रंग

मूल कहानियाँः निकोलाई नोसोव
नाट्य रूपान्तरः कविता सुरेश
चित्रः धनंजय
ISBN: 978-81-87171-13-3
आकारः 7”x 9.5”
पृष्ठ संख्याः 40

चकमक में प्रकाशित तीन विविधतापूर्ण नाटक जो बच्चों की सोच-समझ को विस्तार देते हैं। तर्क के आधार पर दुनिया को देखने, किताबों से जुड़ने का सन्देश देने वाले इन नाटकों में जीवन भरा हुआ है।

हड्डी और अन्य नाटक

रचनाकारः असगर वजाहत, भारत रत्न भार्गव, सुधाकर प्रभु
आवरणः विवेक
ISBN: 978-81-87171-14-0
आकारः 7”x 9.5”
पृष्ठ संख्याः 48

उर्दू किताबें

बच्चे चाहते हैं कि जो उन्हें पसन्द है, जो उनके खयालों में है और जो उनके ख्वाबों में है, वैसा ही सब कुछ उन किताबों में भी हो जो वो पढ़ते हैं या बड़े उन्हें पढ़कर सुनाते हैं। बच्चों की ऐसी ही ख्वाहिश को हकीकत में ढाला गया है इन चित्रों वाली कहानियों और कविताओं की किताबों में।

चित्रकथाएँ

बारिश का एक दिन

एक दिन एक लड़की घर में सो रही थी। अचानक छत पर भड़-भड़ की आवाज़ हुई तो उसने देखा, हर तरफ पानी ही पानी। घर का सामान पानी के साथ बहा जा रहा था। वो भी बह जाती पर वो हिम्मती थी।

कहानी: जैकी जकनोरे
सम्पादन: रिनचिन
उर्दू तरजुमा: मैमुना जाफ़री
चित्र: कनक
ISBN: 978-81-89976-45-3
आकार: 9"x 7"
पृष्ठ संख्या: 16

इस किताब का मूल हिन्दी संस्करण मुस्कान, भोपाल ने प्रकाशित किया है।
सम्पर्क : www.muskaan.org

मैं भी...

एक सहज, सरल और प्यारी चित्रकथा। नन्हे बतख के बच्चे को मिला छुटकू-सा चूज़ा। दोनों बने दोस्त, ढूँढा उन्होंने मिलकर कुछ-कुछ।

चित्र एवं कहानी:
वी. सुतेयेव
उर्दू तरजुमा:
कहकशाँ अनवर
ISBN: 978-81-87171-90-4
आकार: 9"x 7"
पृष्ठ संख्या: 12

बिल्ली के बच्चे

बिल्ली के तीन बच्चे हैं। एक काला, एक भूरा और एक सफेद। तीनों ही शरारती। वे कभी चूहे के पीछे भागते हैं तो कभी मेंढक के पीछे। कोशिश करते हैं कि बस चूहा या मेंढक पकड़ में आ ही जाए पर हर बार ऐसा कुछ होता है कि उनका रंग बदल जाता है!

चित्र एवं कहानीः वी. सुतेयेव
उर्दू तरजुमाः कहकशाँ अनवर
ISBN: 978-81-89976-69-9
आकारः 9"x 7"
पृष्ठ संख्याः 16

नाव चली

मेंढक को अपनी तैराकी पर गुमान था। पर उसके दोस्त चूज़ा, चूहा, चींटी और गुबरैला तैरना नहीं जानते थे। फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी, तरकीब लगाई और बनाई एक अनोखी नाव! और उसमें बैठकर की सैर।

चित्र एवं कहानीः वी. सुतेयेव
उर्दू तरजुमाः मंज़ूर एहतेशाम
ISBN: 978-81-89976-30-9
आकारः 9"x 7"
पृष्ठ संख्याः 12

चूहे को मिली पेंसिल

चूहे को भूख लगी है। वह खाने के लिए कुछ तलाश कर रहा है। उसे मिलती है एक पेंसिल। चूहा उसे कुतरना चाहता है, मगर पेंसिल चाहती है... बचकर भाग निकलना। पढ़िए वह क्या कमाल करती है!

चित्र एवं कहानीः वी. सुतेयेव
उर्दू तरजुमाः मंज़ूर एहतेशाम
ISBN: 978-81-89976-41-5
आकारः 9"x 7"
पृष्ठ संख्याः 12

रूसी और पूसी

रूसी ने एक चित्र बनाया। वह था उसकी दोस्त पूसी के लिए घर। घर में क्या-क्या चाहिए यह सब पूसी बताती जाती है। सब कुछ बनता जाता है। मगर आखिर में पूसी नाराज़ क्यों?

चित्र एवं कहानी: वी. सुतेयेव
उर्दू तरजुमा: कहकशाँ अनवर
ISBN: 978-81-89976-42-2
आकार: 7"x 9"
पृष्ठ संख्या: 12

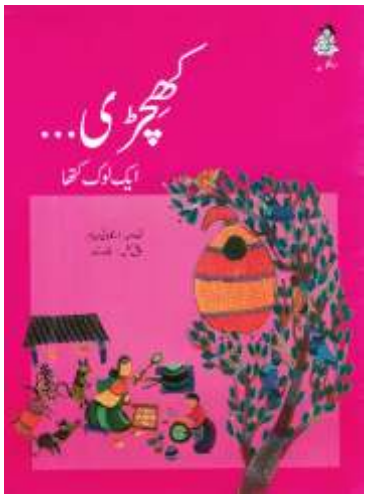

खिचड़ी...

बिरजू को ससुराल में खिचड़ी का ज़ायका इतना पसन्द आया कि उसने घर जाने के बाद भी खिचड़ी खाने की सोची। पर बिरजू था भुलक्कड़। घर था दूर और बिरजू था आदत से मजबूर। खिचड़ी कभी बनी चिड़ि तो कभी उड़ी। तो क्या बिरजू खिचड़ी खा सका? इस लोककथा को गोण्ड परधान शैली के चित्रों ने बेहद खूबसूरत बना दिया है।

प्रस्तुति: जितेन्द्र कुमार
चित्र: दुर्गाबाई व्याम
उर्दू तरजुमा: कहकशाँ अनवर
ISBN: 978-81-89976-70-5
आकार: 7"x 9.5"
पृष्ठ संख्या: 12

तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा?

ऊपर वाले कमरे से मुर्गी का अण्डा लुढ़ककर सीढ़ियों से नीचे आने लगा। फिर वो लुढ़कता गया, लुढ़कता गया और लुढ़कता ही गया। उसकी खोज में मुर्गी पीछे-पीछे चलती गई, चलती गई और चलती ही गई। रास्ते में उसे जो भी मिला उससे पूछा, "तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा?" क्या उसे अण्डा मिला?

उर्दू तरजुमा: कहकशाँ अनवर
चित्र: कनक
ISBN: 978-81-87171-80-5
आकार: 7"x 9.5"
पृष्ठ संख्या: 24

नन्हे चूज़े की दोस्त...

मुर्गी माँ यह देखकर हैरान है कि बिल्ली उसके नन्हे चूज़े के साथ क्या कर रही है, कहीं खा तो नहीं जाएगी? मगर चूज़ा अपनी नई दोस्त के साथ खेलने में मस्त है। एक मज़ेदार कहानी।

रावेन्द्र कुमार 'रवि'
उर्दू तरजुमाः मंज़ूर एहतेशाम
कोलाज एवं सज्जाः कनक
ISBN: 978-81-89976-36-1
आकारः 11"x 8.5"
पृष्ठ संख्याः 20

ओ हरियल पेड़...

पेड़ क्यों सूखा? इसके जवाब की तलाश किसी पहाड़ी नदी के प्रवाह की तरह तेज़ी से मुड़ते-घुमड़ते काली चींटी तक पहुँचती है। पारम्परिक उड़िया लोककथा उर्दू और अँग्रेज़ी भाषा में एक साथ।

चित्रः रानू टाइटस
उर्दू तरजुमाः मंज़ूर एहतेशाम
ISBN: 978-81-89976-39-2
आकारः 9"x 7"
पृष्ठ संख्याः 32

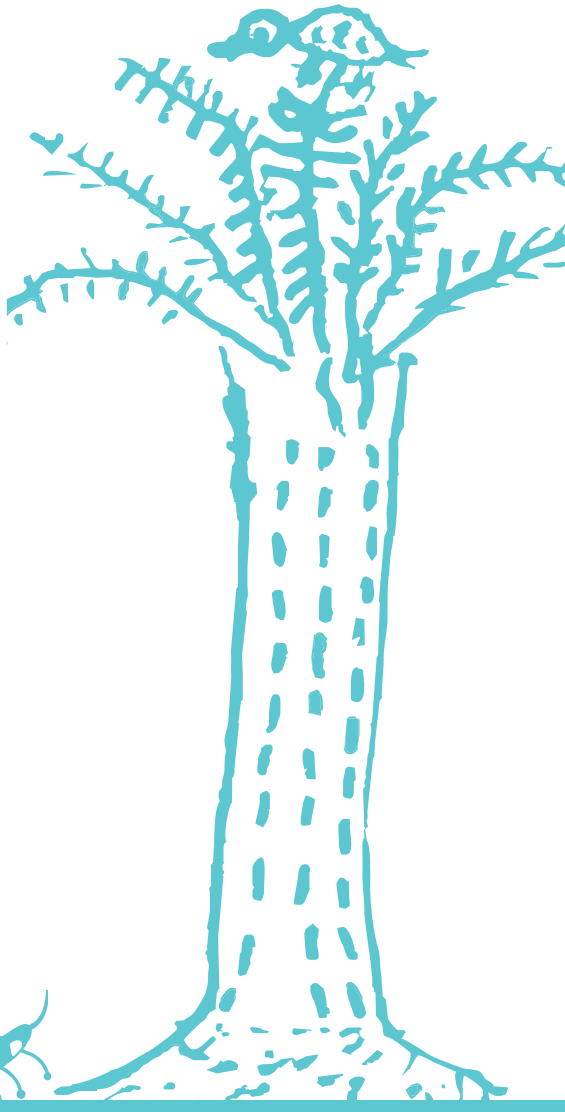

कविताएँ

आपके जापानी हाइकू

हाइकू यानी जापानी शैली की छोटी कविताएँ। दरअसल हाइकू वो सब कुछ हैं जिन्हें आप महसूस करते हैं। ये कोई दृश्य, मौसम की विशेष बात या आसपास के परिवेश की सामान्य घटना भी हो सकती है।

संचयनः तेजी ग्रोवर
उर्दू तरजुमाः
अहसान वारसी 'अतहर'
चित्रः रानू टाइटस
ISBN: 978-81-89976-38-5
आकारः 8.5"x 5.5"
पृष्ठ संख्याः 32

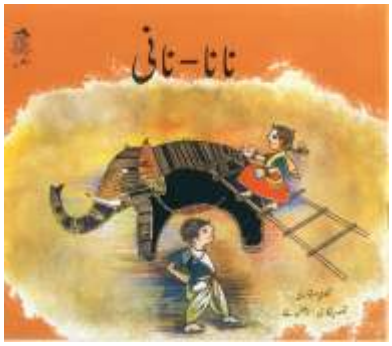

नाना-नानी

मालवी भाषा के शब्दों के साथ बुनी गई एक लम्बी कविता। एक-दूसरे से ऊँचा होने की होड़ में नाना-नानी ने किन-किन चीज़ों का सहारा नहीं लिया। नानी चढ़ी मकान पर तो नाना चढ़े पहाड़। फिर नानी ऐसी जगह चढ़ी कि नाना पा न सके पार। शब्दों की पुनरावृत्ति शब्द भण्डार को समृद्ध बनाने और भाषा से दोस्ती करने में सहायक सिद्ध होगी।

घनश्याम तिवारी
उर्दू तरजुमाः मंज़ूर एहतेशाम
चित्रः धनंजय
ISBN: 978-81-89976-32-3
आकारः 9"x 7"
पृष्ठ संख्याः 12

अक्कड़-बक्कड़

थोड़ी कल्पना और कुछ वास्तविकता - बन गया खेल गीत। इनमें कभी तुक होती है और कभी नहीं भी होती। पर बच्चों द्वारा रचे गए इस साहित्य में खुशबू और मिठास खूब होती है जो पढ़ने वालों को तुरन्त इनसे जोड़ देती है।

संकलनः मनोज साहू 'निडर'
उर्दू तरजुमाः कहकशाँ अनवर
चित्रः प्रीति सलूजा
ISBN: 978-81-87171-44-6
आकारः 8.5"x 5.5"
पृष्ठ संख्याः 48

www.eklavya.in

किताब एक, भाषाएँ अनेक

अपनी ही भाषा में किताब पढ़ने का अपना मज़ा है। इससे भाषा के साथ हमारा रिश्ता मज़बूत होता है और कई अलग-अलग भाषाओं के साहित्य से परिचित होने का मौका मिलता है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए एकलव्य ने कुछ चुनिन्दा बाल साहित्य को एकाधिक भाषाओं में प्रकाशित किया है। ऐसा करते हुए हमने मराठी, गुजराती, बांग्ला जैसी मुख्यधारा की भाषाओं के साथ-साथ मध्य प्रदेश के जिन इलाकों में हम काम करते हैं, वहाँ की भाषाओं - मालवी, बुन्देली, गोण्डी, कोरकू - को भी चुना है। इन किताबों की एक झलक यहाँ प्रस्तुत है।

नाव चली

वी. सुतेयेव द्वारा लिखी और चित्रांकित इस सुप्रसिद्ध रूसी चित्रकथा को हिन्दी और अँग्रेज़ी के साथ ही छत्तीसगढ़ी, बांग्ला, बुन्देली, मालवी और मराठी में भी प्रकाशित किया गया है।

डोंगा चलिस (छत्तीसगढ़ी)
अनुवादः छन्नुराम मार्कन्डे

नाव चालली रे (मराठी)
अनुवादः माधव केलकर

नाव चाली (मालवी)
अनुवादः के.आर. शर्मा

नौका चले (बांग्ला)
अनुवादः टुलटुल बिस्वास

चूहे को मिली पेंसिल

चूहा पेंसिल को कुतरना चाहता था... पेंसिल ने कुछ ऐसा किया कि चूहा गायब हो गया। प्यारी-सी कहानी, जो बच्चों को खूब भाती है। वी. सुतेयेव की कहानी और चित्रों से बनी यह चित्रकथा हिन्दी और अँग्रेज़ी के अलावा बुन्देली, मराठी, मालवी, बांग्ला व छत्तीसगढ़ी में भी प्रकाशित की गई है।

उंदराला सापडली पेंसिल (मराठी)
अनुवादः माधव केलकर

चुखरा कों मिली कलम (बुन्देली)
अनुवादः रजनी यादव,
पं. गुणसागर सत्यार्थी

मुसवा ला मिलीस कलम (छत्तीसगढ़ी)
अनुवादः छन्नुराम मार्कन्डे

ऊंदरा के लादी पेम्सिल (मालवी)
अनुवादः के.आर. शर्मा

इन्दूरे पेयेथे पेंसिल (बांग्ला)
अनुवादः टुलटुल बिस्वास

मैं भी...

हर काम अपने दोस्त की तरह करने की सहज बाल-प्रवृत्ति पर आधारित एक प्यारी चित्रकथा।

मी पण (मराठी)
अनुवादः सुधा हर्डीकर

रूसी और पूसी

रूसी ने अपनी बिल्ली पूसी के लिए बनाया एक घर का चित्र। घर की चीज़ों में थी एक खास चीज़ जिसे देख पूसी मचल उठी और...। इस रूसी कहानी को हिन्दी और अँग्रेज़ी में नन्हे पाठकों ने खूब सराहा है। अब यह चित्रकथा मराठी में भी प्रकाशित की गई है।

रूसी आणि पूसी (मराठी)
अनुवादः सुधा हर्डीकर

एकलव्य के सहयोग से ये चारों रूसी किताबों के गुजराती संस्करण आर्च ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित किए गए हैं।
सम्पर्कः arch.dharampur@gmail.com

बेटी करे सवाल (तेलुगु)

अनु गुप्ता, कैरन हेडॉक

एक लड़की जब किशोरावस्था में होती है तब उसे दोहरे द्वन्द्व का सामना करना पड़ता है। एक तो उसके शरीर में होने वाले बदलाव और दूसरा परिवार के सदस्यों या समाज द्वारा उसके साथ किए जाने वाला बदला हुआ व्यवहार। उसके मन में ढेरों प्रश्न होते हैं जिनके जवाब उसे अधिकांशतः नहीं मिलते। देवास ज़िले में एकलव्य के किशोरी स्वास्थ्य कार्यक्रम के अनुभवों से विकसित हुई है यह किताब ऐसे बहुत-से सवालों के उत्तर तलाशने में किशोरी के मन को बल देती है। स्वास्थ्य और सामाजिक परिवेश के हर पहलू पर इसमें चर्चा की गई है।

मूलतः हिन्दी में विकसित व प्रकाशित इस किताब को मांची पुस्तकम ने तेलुगु में प्रकाशित किया है। सम्पर्क: www.manchipustakam.in

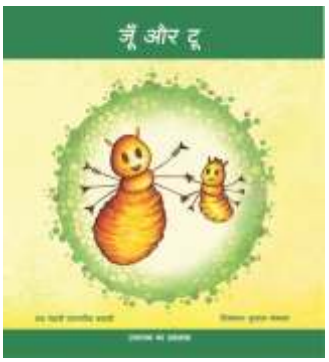

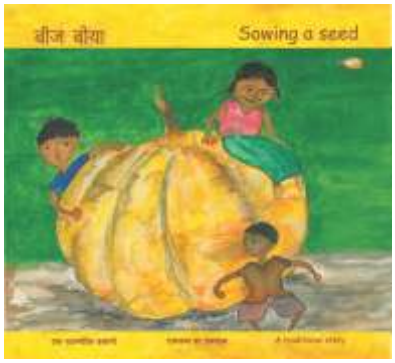

बीज बोया और जूँ और टू

क्वेस्ट द्वारा विकसित दो चित्रकथाएँ जिनमें भाषा की मौज भी है और सरल-से कथानक का रस भी। इन्हें एकलव्य द्वारा हिन्दी, अँग्रेज़ी, मराठी तथा गुजराती में प्रकाशित किया गया है।

ऊ टूची गोष्ट (मराठी)
ISBN: 978-93-81300-04-6

जूँ अणे टू (गुजराती)
ISBN: 978-93-81300-07-7

बी लावलं (मराठी-अँग्रेज़ी)
ISBN: 978-93-81300-01-5

बी वाव्युं (गुजराती-अँग्रेज़ी)
ISBN: 978-93-81300-06-0

करना और सीखना

दरअसल करना ही तो सीखना है। और इसी से प्रेरित इन किताबों की दुनिया में ना तो कुछ कबाड़ है और ना कोई बेकाम की चीज़। हर उम्र और रुचि के पाठकों के लिए कुछ गढ़ने, बनाने, तोड़ने-मरोड़ने और बहुत सीखने को है यहाँ। इन किताबों के ज़रिए उनकी कल्पनाशीलता का विस्तार होगा और वे पहुँच जाएँगे विज्ञान और कला की सक्रिय दुनिया में।

नैतिक शिक्षा के नाम पर बच्चों को 'यह करो ', 'यह न करो' जैसे सबक सिखाने के बदले यह किताब बच्चों के विवेक और समझ पर विश्वास रखती है और उचित-अनुचित का निर्णय स्वयं करने की स्वतंत्रता देते हुए उनके समाजीकरण की प्रक्रिया को सहज बनाती है।

पास या नापास

वर्षा सहस्रबुद्धे

अनुवादः शारदा बर्वे

चित्रः माधुरी पुरन्दरे

ISBN: 978-81-87171-22-5

आकारः 5.5"x 8.5"

पृष्ठ संख्याः 24

ध्यान लगाकर सुनना ही असल में सुनना होता है। अपने आसपास अनगिनत ऐसी आवाज़ें होती हैं जो शोर में गुम हो जाने या हमारे अन्यमनस्क होने की वजह से हम सुन नहीं पाते। प्रकृति और परिवेश में गूँजती ऐसी ही अनसुनी-सी आवाज़ों को सुनने का अभ्यास कराती है यह किताब।

टिपिक.. पाँ.. भर्र..

वर्षा सहस्रबुद्धे

अनुवादः शारदा बर्वे

चित्रः माधुरी पुरन्दरे

ISBN: 978-81-87171-24-9

आकारः 5.5"x 8.5"

पृष्ठ संख्याः 24

जिन बच्चों ने हाल ही में पढ़ना सीखा है, उनके लिए यह किताब एक रोचक उपहार है। सादे-सरल शब्दों और मनमोहक चित्रों के ज़रिए यह कहानी बच्चों को अपने आसपास की दुनिया में खोजबीन करने के लिए प्रेरित करती है। अपनी खोज की प्रदर्शनी लगाना एक अभिनव विचार है। यह सीखने के नए तरीकों के द्वार भी खोलती है।

अनोखी प्रदर्शनी

वर्षा सहस्त्रबुद्धे
अनुवादः शारदा बर्वे
चित्रः माधुरी पुरन्दरे
ISBN: 978-81-87171-23-2
आकारः 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्याः 24

गुब्बारा बच्चों के लिए एक मज़ेदार खिलौना है। उसमें हवा भरना और फिर निकाल देना, हवा भरकर आसमान में उछाल देना... कितनी ही तरह से बच्चे गुब्बारों के रोचक व्यवहार का आनन्द लूटते हैं। यह किताब उन्हें गुब्बारों के और नज़दीक ले जाती है, गुब्बारों के साथ खेलने और उस खेल के परिणामों को ध्यान से देखने के लिए प्रेरित करती है।

गुब्बारे

वर्षा सहस्त्रबुद्धे
अनुवादः शारदा बर्वे
चित्रः माधुरी पुरन्दरे
ISBN: 978-81-87171-21-8
आकारः 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्याः 24

अपने आसपास की दुनिया को किसी मकसद से ध्यानपूर्वक देखना एक रोचक अनुभव होता है। इस किताब में बच्चे पत्तों को देखते हैं। यह देखना अनेक अर्थ लिए हुए है। पत्तों को उनकी रचना, रंग और स्पर्श के आधार पर बाँटना-देखना-परखना और फिर उन्हें अपनी कल्पना के आयामों से सजाकर कागज़ पर चित्रित करना... काफी कुछ सिखाता है।

पत्ते ही पत्ते

वर्षा सहस्त्रबुद्धे
अनुवादः शारदा बर्वे
चित्रः माधुरी पुरन्दरे
ISBN: 978-81-87171-25-6
आकारः 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्याः 24

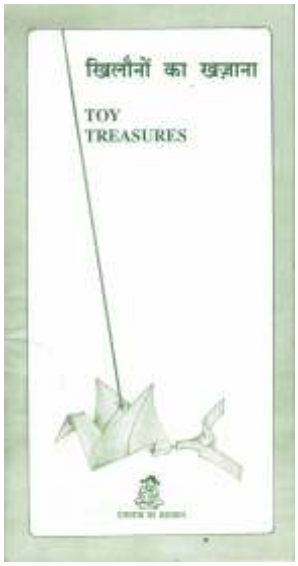

कागज़ से तरह-तरह की आकृतियाँ बनाना बहुत से बच्चों का प्रिय शगल होता है। यह किताब कागज़ के ग्लाइडर, हैलीकॉप्टर और उड़ती चिड़िया बनाना तो सिखाती है ही, साथ में टोपीशंकर की मज़ेदार कहानी के ज़रिए अनेक आकार-प्रकार की टोपियाँ भी बनवाती है। बच्चों और बच्चों के साथ काम करने वालों के लिए एक उपयोगी सौगात। यह किताब द्विभाषी (हिन्दी-अँग्रेज़ी) है।

***खिलौनों का खज़ाना* /**
Toy Treasures
अरविन्द गुप्ता
चित्र एवं सज्जाः अविनाश देशपाण्डे
ISBN: 978-81-87171-37-9
आकारः 5.5"x 10.5"
पृष्ठ संख्याः 68

अपने हाथों से कुछ बनाना और करके देखना... यह खेल भी हो सकता है और विज्ञान की गतिविधि भी। इस किताब में विज्ञान के अनेक ऐसे प्रयोग हैं, जो कबाड़ की चीज़ों से किए जा सकते हैं। यह द्विभाषी (हिन्दी-अँग्रेज़ी) किताब बताती है कि कैसे साधारण चीज़ों को शिक्षण सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

***कबाड़ से जुगाड़* / Little Science**
अरविन्द गुप्ता
चित्र एवं सज्जाः अविनाश देशपाण्डे
ISBN: 978-81-87171-03-4
आकारः 5.5"x 10.5"
पृष्ठ संख्याः 68

इस द्विभाषी (हिन्दी-अँग्रेज़ी) किताब में भौतिकी, ज्यामिति आदि के कुछ मूलभूत सिद्धान्तों को सहज-सरल तरीके से समझाते हुए रोचक प्रयोग बताए गए हैं। प्रयोग भी ऐसे जो बच्चों को खेल की तरह हल्के लगें। 8-9 साल से बड़े बच्चों के साथ-साथ शिक्षकों और अभिभावकों के लिए भी उपयोगी किताब।

***खिलौनों का बस्ता* /**
The Toy Bag
अरविन्द गुप्ता
चित्र एवं सज्जाः अविनाश देशपाण्डे
ISBN: 978-81-87171-04-1
आकारः 5.5"x 10.5"
पृष्ठ संख्याः 68

सूक्ष्मदर्शी का नाम आते ही बच्चे और बड़े, सभी के मन में जिज्ञासा जाग उठती है। फूलों-पत्तियों, कीड़ों-मकोड़ों आदि के सूक्ष्म अंगों-अवयवों को देखने की चाहत होती है। मगर एक तो सूक्ष्मदर्शी महँगे होते हैं और दूसरे ये प्रयोगशालाओं में सम्हालकर अलग रखे होते हैं। उन तक हमेशा और हर किसी की पहुँच नहीं होती। ऐसे में अगर कोई हमें अपना ही सस्ता, सुन्दर, टिकाऊ सूक्ष्मदर्शी बनाने के तरीके बताए तो कितना अच्छा! यह किताब इसी हसरत को पूरा करती है।

अपना जुगाड़ी सूक्ष्मदर्शी

बद्रीप्रसाद मैथिल

सहयोगः फूलवन्ती मैथिल

चित्रः आशीष नागरकर

एवं विवेक वर्मा

ISBN: 978-81-87171-51-5

आकारः 7"x 9.25"

पृष्ठ संख्याः 64

लिखना और पढ़ना सीखने से पहले बच्चे चित्र बनाने लगते हैं। कुछ अधूरी आकृतियों और नमूनों की सहायता से यह किताब चित्र बनाने के लिए प्रेरित करती है, साथ ही बच्चों की कल्पनाशीलता को मुक्त गगन में विचरण करने का अवकाश भी देती है। सभी उम्र के बच्चों के लिए एक मूल्यवान उपहार।

***चलो चित्र बनाएँ* / Let's Draw**

कैरन हेडॉक

ISBN: 978-81-87171-44-7

आकारः 8.5"x 11"

पृष्ठ संख्याः 24

माचिस की तीलियों से विभिन्न ज्यामितीय आकृतियाँ, प्लास्टिक के बटनों से घिरनी, पुरानी शीशियों से रेत घड़ी। घरों में आसानी से मिल जाने वाली वस्तुओं की सहायता से बच्चे कितने ही मॉडल बना सकते है। ये मॉडल केवल प्रदर्शन के लिए नहीं हैं, बल्कि रुचिकर खिलौने भी हैं। विज्ञान के सिद्धान्तों को समझने के रास्ते में एक मददगार हमसफर।

खेल खेल में

अरविन्द गुप्ता

चित्र एवं सज्जाः अविनाश देशपाण्डे

ISBN: 978-81-87171-15-7

आकारः 9.25"x 6.5"

पृष्ठ संख्याः 48

यह किताब तीन दशकों से भी ज़्यादा समय से बच्चों और प्रयोगधर्मी शिक्षकों, अभिभावकों की साथी रही है। इसमें 100 से भी अधिक नमूने हैं जो रोचक और उपयोगी चीज़ें बनाना सिखाते हैं। छपाई और बुनाई के नमूने, पतंगें, कागज़ के मोती, और भी कुछ-कुछ। और बताने का तरीका इतना सहज कि इन्हें बनाने के साथ ही कल्पना की उड़ान भरकर कई और चीज़ें बनाने का मन करने लगता है।

कुछ-कुछ बनाना

ऍन सायर वाइज़मैन
अनुवादः अरविन्द गुप्ता
ISBN: 978-81-87171-68-3
आकारः 7.25"x 9.5"
पृष्ठ संख्याः 148

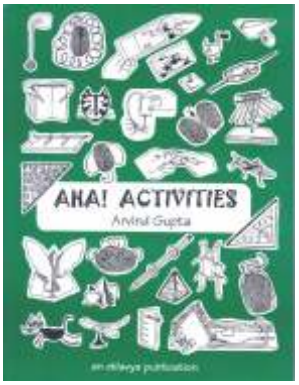

This book shows a way to use various used material to make toys, science models and decorative items. Activity is not just about making 'working models', it means doing something innovative, learning, joy & sagacity in itself. Useful for inquisitive kids and innovative adults.

Aha! Activities

Arvind Gupta
Illustration & Layout:
Monil Dalal
ISBN: 987-81-87171-88-1
Dimensions: 8.25"x 11"
Pages: 120

घर में या आसपास आसानी से मिल जाने वाली चीज़ों से मज़ेदार खिलौने बनाना बताना इस किताब की विशेषता है। खिलौने भी ऐसे जो टूटें-फूटें तो गम नहीं। बच्चे इन्हें बार-बार बनाना चाहेंगे। सुस्पष्ट निर्देश एवं चित्र। सभी के लिए उपयोगी किताब।

खेल खिलौने

संयोजन एवं सम्पादनः
कविता सुरेश, अनिल सौमित्र
लेआउट एवं डिज़ाइनः
जया विवेक
आवरणः किशोर उमरेकर
ISBN: 978-81-87171-08-9
आकारः 7"x 9.25"
पृष्ठ संख्याः 48

हमेशा से पसन्द की जाने वाली कहानियाँ कौन-सी? पंचतंत्र की, यही कहेंगे आप। इन कहानियों को गतिविधि की शक्ल में पेश किया गया है इस किताब में। कहानी पढ़ने का लुत्फ तो है ही साथ ही चित्र में छुपे पात्रों को सामने लाने की दिमागी कसरत भी है।

छुपन-छुपाई

जगदीश जोशी
ISBN: 978-81-89976-98-9
आकारः 7"x 9.25"
पृष्ठ संख्याः 48

माथापच्ची

हैरत में डाल देने वाले सवाल और पहेलियाँ सभी का मन लुभाती हैं। इन किताबों में इसी तरह की अनेक चीज़े हैं जो दिमाग की धार तेज़ करती हैं और नटखट चुनौतियों से जुझने का अभ्यास कराती हैं। बच्चों से लेकर 60-70 पार बड़ों तक, सभी तरह के पाठकों ने इन किताबों को खूब पसन्द किया है।

माचिस की 9 तीलियों से 4 त्रिभुज बनाइए - चकरा गए ना? इसे करके देखें, ज़्यादा मुश्किल नहीं है। ऐसी ही कुछ और पहेलियाँ इस किताब में हैं, खुद हल करें और अपने दोस्तों से भी करवाएँ।

माचिस की तीलियों के रोचक खेल

ISBN: 978-81-87171-01-0
आकार: 5.5”x 8.5”
पृष्ठ संख्या: 16

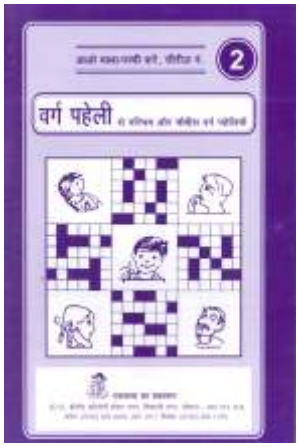

अनेक अखबारों और पत्रिकाओं में वर्ग पहेली का एक निश्चित स्थान होता है। उन्हें हल करने में बच्चे-बड़े सबकी रुचि होती है। ऐसी अनेक वर्ग पहेलियों के साथ-साथ यह किताब उनके प्रकार और रचना के विषय में भी परिचय देती है। इसे पढ़कर आप नई वर्ग पहेलियाँ बना सकेंगे।

वर्ग पहेली

ISBN: 978-81-87171-31-7
आकार: 5.5”x 8.5”
पृष्ठ संख्या: 32

इस शृंखला की पाँच किताबें (माचिस की तीलियों के रोचक खेल, वर्ग पहेली, माथापच्ची, भूलभूलैयाँ और नज़र का फेर) की 2,00,000 से ज़्यादा प्रतियाँ बिक चुकी हैं।

बूझो बूझो बूझो! मगज लगाकर जूझो!!... ये पहेलियाँ भी हैं और कविताएँ भी। पंक्तियाँ इतनी सरल-सरस कि गुनगुनाने में मज़ा आएगा। ये काव्य-पहेलियाँ अनूठे अन्दाज़ में अनेक पशु-पक्षियों का परिचय भी कराती चलती हैं। चौथी-पाँचवीं के बच्चों से बड़ों तक - सभी इनका मज़ा ले पाएँगे।

बूझो-बूझो

रामवचन सिंह 'आनन्द'

चित्रः सुभाष व्याम

ISBN: 978-81-87171-29-4

आकारः 5.5"x 8.5"

पृष्ठ संख्याः 24

बात-बात में दूसरों को चक्कर में डालने का मज़ा ही कुछ और है। टेढ़े सवालों से खुद माथापच्ची करना और दूसरों से करवाना मज़ेदार होता है। उम्र के सवाल, संख्याओं के सवाल, आकृति और हिसाब के सवाल... हैरान करने वाले सवालों के सीधे-से जवाब!

माथापच्ची

चित्रः शिवेन्द्र पाण्डिया

ISBN: 978-81-87171-34-0

आकारः 5.5"x 8.5"

पृष्ठ संख्याः 16

कागज़ पर बने आड़े-तिरछे, सँकरे से रास्तों में से पेंसिल चलाते हुए मंज़िल तक पहुँचना एक रोचक अनुभव होता है - यह खेल है भूलभुलैयाँ का। इस किताब में अनेक तरह की चुनौतियाँ हैं, कुछ आसान, कुछ मुश्किल।

भूलभुलैयाँ

ISBN: 978-81-87171-39-3

आकारः 5.5"x 8.5"

पृष्ठ संख्याः 16

दर्पण एक उपयोगी वस्तु है, खिलौना है और विज्ञान के प्रयोग करने का उपकरण भी। यह किताब दर्पण से खेलने के कुछ नए तरीके सुझाती है और सममिति की अवधारणा से परिचय कराती है। रेखाओं, आकारों, आकृतियों, नमूनों को दर्पण की सहायता से अलग-अलग कोण से देखना... यह देखना ही नए आकारों, आकृतियों और नमूनों का निर्माण भी करता है।

दर्पण से बूझो

ISBN: 978-81-87171-43-0
आकार: 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्या: 16

इन कविता-पहेलियों में अंकगणित के सवाल हैं... खुद बूझना है और दोस्तों से पूछना है। आसानी से याद हो जाने वाली सरल और मज़ेदार पहेलियाँ... जो आपका मन बहलाएँगी और दिमाग सहलाएँगी।

मनगणित

गोपीचन्द श्रीनागर
चित्र: दुर्गाबाई

ISBN: 978-81-87171-53-9
आकार: 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्या: 20

आँखें हमेशा सही देखती हैं, है ना? इस यकीन को चुनौती देती यह किताब हमें अनेक दृष्टिभ्रमों से रूबरू कराती है। चक्कर में डालने वाले चित्र! ज्ञान के चक्षु को खोलने वाली एक रोमांचक किताब!

नज़र का फेर

ISBN: 978-81-87171-58-4
आकार: 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्या: 20

इस किताब में पहेलियाँ इतनी रोचक हैं कि आप इन्हें हल किए बगैर चैन से नहीं बैठेंगे। हर कविता में छिपा है गणित का एक सवाल.... बूझो तो जानें!

बूझो तो जानें

मधु पन्त, धर्म प्रकाश

चित्रः शीर्षेन्दू घोष, जोएल गिल

ISBN: 978-81-89976-00-2

आकारः 5.5"x 8.5"

पृष्ठ संख्याः 20

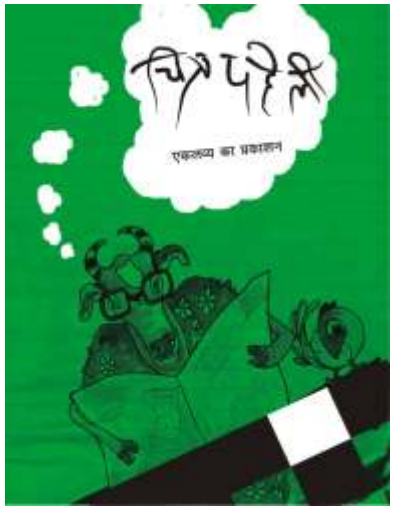

चुनौतियाँ किसे नहीं लुभातीं? वर्ग पहेली हल करने के लिए अगर संकेत सरल स्पष्ट चित्रों के रूप में हों तो छोटे बच्चे भी इनका भरपूर मज़ा ले पाते हैं। लिखित भाषा सीखने में भी यह मदद कर सकती है।

चित्र पहेली

चित्रः कैलाश दुबे एवं विवेक वर्मा

आवरणः जितेन्द्र ठाकुर

ISBN: 978-81-87171-78-2

आकारः 8.5"x 11"

पृष्ठ संख्याः 28

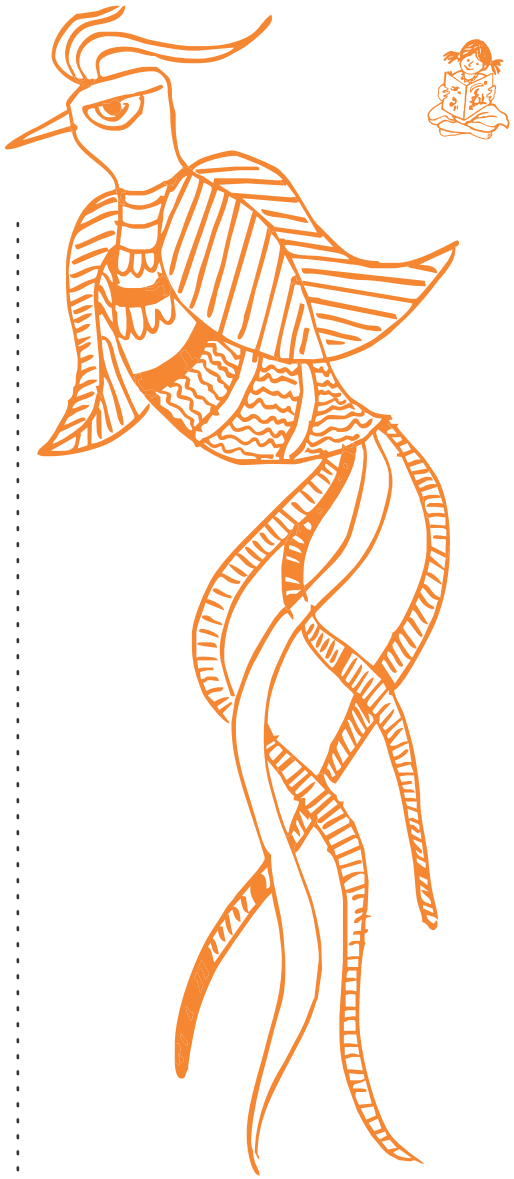

कागज़ से कमाल

कागज़ को बिना काटे, बिना चिपकाए इस तरह से मोड़ना कि एक आकृति बन जाए, यह जापानी कला ऑरीगेमी कहलाती है। चिड़िया, फूल, तितली या गेंद, कुछ भी बनाया जा सकता है इस तरह से। ऑरीगेमी की शुरुआत आसान चीज़ों से करें, फिर कुछ भी मुश्किल नहीं होगा। यह उँगलियों के साथ-साथ मन को भी साधने में मदद करता है।

ऑरीगेमी पुस्तिकाओं का सेट

ऑरीगेमी की ओर पहला कदम बढ़ाने वालों के लिए बेहद उपयोगी 5 पुस्तिकाओं का सेट। निर्देशों की सहायता से चन्द मिनटों में तैयार हो जाएँगे नाव टोपी, फूल-पत्ती…।

ISBN: 978-81-89976-22-4
आकार: 4" X 5.5"

आप एक बार ऑरीगेमी के दो प्रमुख आधारों में से कोई एक भी सीख लें तो ज़रा-सा मोड़ने पर क्या-क्या कमाल की चीज़ें बना सकेंगे। इस किताब में पानी गेंद आधार और उससे बनने वाले बहुत-से खिलौने दिए गए हैं जो 10-12 साल के बच्चे से लेकर बड़े सभी बना सकते हैं।

एक आधार अनेक आकार

रविन्द्र केसकर
रेखाचित्र: सरिता पारे
ISBN: 978-81-87171-09-6
आकार: 8.5" X 11"
पृष्ठ संख्या: 40

सारस से लेकर तितली तक, गेंद से लेकर लट्टू तक… सभी कुछ बन सकता है ऑरीगेमी से। पर अगर गौर से देखें तो गणितीय गणना और कला का कमाल का जोड़ भी है यह। ऑरीगेमी की मदद से गणित को आसान करती ये किताब, बच्चों और बड़ों के लिए समान रूप से उपयोगी है।

तितलियाँ और अन्य खिलौने

रविन्द्र केसकर
रेखाचित्र: सरिता पारे
ISBN: 978-81-87171-20-1
आकार: 8.5" X 11"
पृष्ठ संख्या: 48

किशोरों के लिए

किशोर उम्र के उस पड़ाव पर होते हैं जहाँ वे काफी-कुछ जानते हैं और बहुत कुछ जानना चाहते हैं। कल्पना का संसार फैल जाता है और साथ ही वे संसार और उसके साथ अपने रिश्तों की पड़ताल कर रहे होते हैं। किशोरों की अनन्त जिज्ञासाओं को कुछ उभारती, कुछ उलझाती और कुछ सवालों को सुलझाती किताबें जो उनके कोमल मन को गुदगुदाएँगी भी...

कथा साहित्य

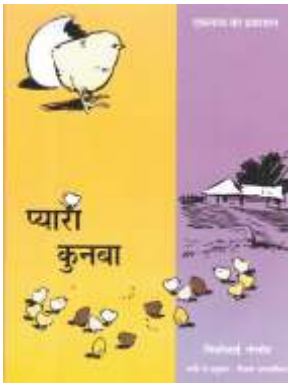

दो दोस्तों की कहानी... उठापटक, कारीगरी, शरारत और सीखना... सब कुछ है इसमें। एक किताब से प्रेरित होकर वे मुर्गी पालने का फैसला करते हैं। इनक्यूबेटर बनाते हैं और करते हैं इन्तज़ार। अण्डों में से चूज़े निकलने का। मगर इससे पहले उन्हें अनेक अनपेक्षित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। किशोरों के लिए एक रोचक बाल उपन्यास।

प्यारा कुनबा
निकोलाई नोसोव
रूसी से अनुवादः
विजया उमराणीकर
चित्रांकनः सौरभ दास
ISBN: 987-81-87171-67-6
आकारः 7"x 9.5"
पृष्ठ संख्याः 66

यह कहानी है आरिफ के सफर की। किशोरावस्था की दहलीज़ पर खड़ा आरिफ चाचा-चाची के घर रहता है। एक दिन वह घर से निकल पड़ता है - अकेले। सफर में कई मुकाम आते हैं, वह कई लोगों से मिलता है, दोस्त बनाता है, उनकी मदद करता है, खुद की नई पहचान भी बनाता है। एक रोचक उपन्यास जो हर उम्र के पाठकों को पसन्द आएगा।

अण्डमान का लड़का
ज़ाई व्हिटेकर
अनुवादः
पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
चित्रः अशोक राजगोपालन
आवरणः जितेन्द्र ठाकुर
ISBN: 978-81-89976-59-0
आकारः 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्याः 180
तूलिका के साथ सह-प्रकाशन

पिप्पी लम्बेमोज़े - वह अपने नाम की तरह ही अजीब है। मगर उसका दिमाग उसके घोड़े से भी तेज़ दौड़ता है और दिल इतना बड़ा कि सारा जहान उसमें समा जाए। एमिल, मार्दी और कार्लसन भी किसी से कम नहीं। पढ़िए इनके कारनामे... ये सब इतने प्यारे और नटखट हैं कि आप इनसे दोस्ती करना चाहेंगे।

पिप्पी, एमिल, मार्दी व कार्लसन के मज़ेदार कारनामे

ऑस्ट्रिड लिंडग्रेन
अनुवादः अरुंधती देवस्थले
चित्रः पिप्पी - लुईस ग्लांज़मन;
एमिल - बियोन बर्ग; मार्दी,
कार्लसन - इलोन विकलैंड
आवरण - इनग्रिड नीमन
ISBN: 978-81-8452-008-8
आकारः 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्याः 296

पिप्पी, एमिल...

...खुशहाल और मनमौजी बचपन की झलकियाँ दिखलाने वाली यह किताब बच्चों और बड़ों सभी के द्वारा पढ़ी जानी चाहिए।

- राष्ट्रीय सहारा

बन्दरों को दोस्त बनाने वाले, शेर को पालक पनीर खिलाने वाले छोटेचाचा की डिक्शनरी में असम्भव शब्द है ही नहीं। छोटेचाचा की दिलचस्प शख्सियत और उनके किस्से - मज़ेदार, डरावने, गम्भीर और सनसनीखेज़! सरिता, रवि और छुटकी को छोटेचाचा अपने खास अन्दाज़ में दुनिया से रूबरू कराते हैं। आप भी हो लीजिए उनके साथ।

छोटेचाचा अब आपके शहर में

वन्दना सिंह
अँग्रेज़ी से अनुवादः
अमित महाजन
चित्रः बी.एम. कामथ
डिज़ाइनः संजय रॉय
ISBN: 978-81-89976-16-3
आकारः 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्याः 108

कहानी कहने-सुनने का सिलसिला न जाने कितना पुराना है। कहानियाँ नदियों की जलधारा की तरह सतत् बहती आ रही हैं। इस संग्रह में चकमक में प्रकाशित कहानियों में से चार लेखकों की छह बेहतरीन कहानियाँ हैं। बच्चों की अपनी दुनिया की कहानियाँ, जिनमें उन्हें अपनी मिट्टी की सौंधी-सौंधी गन्ध आएगी।

मिट्टी की बात
तथा अन्य कहानियाँ

आवरणः धनंजय
ISBN: 978-81-87171-35-5
आकारः 5.5" X 8.5"
पृष्ठ संख्याः 48

गुदगुदाती कथा, अचम्भित करते पात्र और अनपेक्षित घटनाक्रम। इन सब को मिलाकर बना है यह विनोदी उपन्यास। कल्पना और हास्य का अद्भुत मेल। इसे आप बार-बार पढ़ना चाहेंगे।

ऊल-जलूल

कथा एवं चित्रः
सुकुमार राय
अनुवादः
पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
आवरणः कनक
ISBN: 978-81-87171-85-0
आकारः 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्याः 40

अदिति की साहस कथाएँ (भाग 1)

अदिति के नाना-नानी पश्चिमी भारत की एक छोटी-सी रियासत के शासक हैं। वह उन्हीं के साथ रहती है। उसके दोस्त हैं सिरिल चींटा, सुन्दरी हथिनी, एक आँख वाली बन्दरिया और दो ड्रैगन। सुनीति नामजोशी ने अदिति शृंखला के इन उपन्यासों के माध्यम से साहस कथाओं को एक नया अर्थ और नया अन्दाज़ दिया है। इनमें साहसिक कारनामे, रोमांच और उमंग तो है मगर युद्ध, छल-कपट और बैर नहीं है। अदिति और उसके दोस्त सबको दोस्त बनाते चलते हैं और दुनिया को बेहतर बनाने की कोशिशों में जुटे रहते हैं।

अदिति और एक आँख वाली बन्दरिया

+

अदिति और टेम्स नदी का ड्रैगन

+

अदिति और समुद्री संन्यासिन

+

अदिति और विज्ञानी संन्यासिन

ISBN: 978-81-89976-95-8
तूलिका के साथ सह-प्रकाशन

अदिति की साहस कथाएँ 1

बच्चे इन्हें पढ़ते-पढ़ते रहस्य-रोमांच की दुनिया में खो जाते हैं। कई बार तो खुद को पात्र समझ लेते हैं।

- दैनिक नवज्योति

अदिति और एक आँख वाली बन्दरिया

यह किताब बच्चों को कल्पना की ऊँची उड़ान भरना सिखा सकती है तो साहस का पाठ भी पढ़ा सकती है।

- हरिभूमि

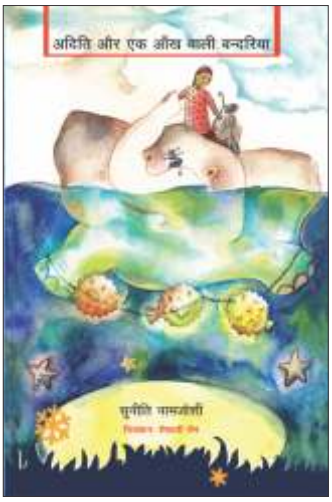

शृंखलाकी इस पहली किताब में चींटे और बन्दरिया की हथिनी से दोस्ती होती है और उन्हें अदिति की परेशानी के बारे में पता चलता है। आग उगलने वाले ड्रैगन ने पूरी रियासत का पानी सोख लिया है। इस मुसीबत से निजात पाने के लिए वे साथ मिलकर चल पड़ते हैं उस ड्रैगन से मिलने। फिर क्या होता है? क्या है उस ड्रैगन की असलियत? वह उनका दोस्त कैसे बनता है, आओ किताब पढ़कर पता लगाते हैं।

अदिति और एक आँख वाली बन्दरिया

सुनीति नामजोशी
अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
चित्रः शेफाली जैन
ISBN: 978-81-89976-80-4
आकारः 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्याः 80

पहले साहसिक कारनामे के बाद चारों जाँबाज़ साथियों का नाम सभी ओर फैल गया है। उन्हें लन्दन से रोहित और रोशन का खत मिलता है जिसमें टेम्स नदी में आए संकट का ज़िक्र है। अब आग उगलने वाला ड्रैगन उनका दोस्त बन चुका है। चारों जाँबाज़ उसे साथ लेकर लन्दन पहुँचते हैं। फिर शुरू होता है अद्‌भुत घटनाओं का दौर।

अदिति और टेम्स नदी का ड्रैगन

सुनीति नामजोशी
अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
चित्रः शेफाली जैन
ISBN: 978-81-89976-88-0
आकारः 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्याः 72

हथिनी परेशान है क्योंकि उसका नाम कहीं खो गया है। क्या जाँबाज़ साथी अपनी दोस्त का नाम ढूँढ पाएँगे? क्या वे समुद्री संन्यासिन से मिल सकेंगे?

अदिति और समुद्री संन्यासिन

सुनीति नामजोशी
अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
चित्रः शेफाली जैन
ISBN: 978-81-89976-92-7
आकारः 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्याः 82

चारों जाँबाज़ साथी और दोनों ड्रैगन कनाडा के स्टोनी लेक पहुँचे हैं विज्ञानी संन्यासिन को सन्देशा देने। पर संन्यासिन तक पहुँचना इतना भी आसान नहीं। कई बाधाएँ हैं रास्ते में।

अदिति और विज्ञानी संन्यासिन

सुनीति नामजोशी

अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

चित्रः शेफाली जैन

ISBN: 978-81-89976-94-1

आकारः 5.5"x 8.5"

पृष्ठ संख्याः 74

जाँबाज़ साथी तलाश में निकले हैं गहरे गुलाब और ग्रेंडल दानवों की। दानव क्या सचमुच बुरे होते हैं? इस प्रश्न से जुड़े मिथक को तोड़ने के साथ ही उन्हें मदद करनी है ग्रेंडल की, जो परेशान है भूल जाने की आदत से। कैसे होता है सब कुछ, जानने के लिए पढ़ें यह किताब।

अदिति और उसके दोस्तों की ग्रेंडल से मुलाकात

सुनीति नामजोशी

अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

चित्रः शेफाली जैन

ISBN: 978-81-81300-05-3

आकारः 5.5"x 8.5"

पृष्ठ संख्याः 72

गोल्डी गुम हो गया है। इस सुराग का पीछा करते हुए कि गोल्डी को एक नीली कन्दरा के बीच में छलाँग लगाते देखा गया है, अदिति और उसके दोस्त क्यूमे के खूबसूरत पहाड़ी इलाके में पहुँचते हैं। इस दौरान उनको मिलती है सिबिल जो सब कुछ जानती है। और मिलता है भूकम्प पैदा करने वाला ज्वालामुखी दैत्य। क्या गोल्डी मिलता है उनको?

अदिति और उसके दोस्तों ने किया ज्वालामुखी दैत्य का सामना

सुनीति नामजोशी

अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

चित्रः शेफाली जैन

ISBN: 978-81-89976-97-2

आकारः 5.5"x 8.5"

पृष्ठ संख्याः 68

युवा पाठकों का राजनीतिक विचारकों से परिचय कराती यह किताब सरल भाषा में लिखी गई है। विचारकों का चुनाव उनके विचारों की मौलिकता, और मानव इतिहास में उनकी महत्ता के आधार पर किया गया है।

राजनीतिक विचारों की कहानी: युवा पाठकों के लिए

रुस्तम सिंह

अँग्रेज़ी से अनुवाद: संदीप राउजी

चित्र व आवरण: जितेन्द्र ठाकुर

ISBN: 978-93-81300-09-1

आकार: 7"x 6.5"

पृष्ठ संख्या: 132

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध

A Story of Political Ideas for Young Readers: Vol.I

ISBN: 978-81-89976-89-7

किशोर पाठकों के लिए लिखी गई एक अनूठी किताब जिसमें विज्ञान के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान देने वाले भारत के वैज्ञानिकों के जीवन प्रसंगों का रोचक वर्णन है। इस किताब में वैज्ञानिकों के जीवन के कई अनछुए पहलूओं को सँजोया गया है। इसमें आप कई जाने-पहचाने वैज्ञानिकों के साथ-साथ नैन सिंह रावत और अरदेसर खरसेदजी जैसे अल्पज्ञात वैज्ञानिकों का भी परिचय प्राप्त कर पाएँगे।

रोशन सितारे

अरविन्द गुप्ता

चित्र: कैरन हेडॉक

ISBN: 978-81-906971-8-7

आकार: 5.5"x 8.5"

पृष्ठ संख्या: 252

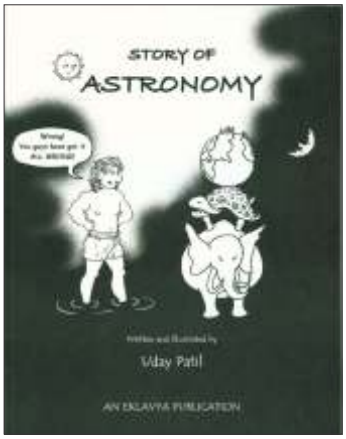

The history of Astronomy spans the history of mankind. Not surprisingly, this history is as interesting and complex as the science itself. This picture-book illustrated in the graphic novel format attempts to recount its evolution in the form of a story.

Story of Astronomy

Uday Patil

ISBN: 978-81-89976-17-0

Dimensions: 8.25"x 10.75"

Pages: 56

वनस्पति जगत् में ताक-झाँक शृंखला की यह पहली किताब पत्तियों पर केन्द्रित है। हमारे आसपास के सरल और रोचक उदाहरणों की मदद से यह पत्तियों की संरचना, प्रकार, कार्य, उपयोग व कई अनूठे करतबों की सचित्र जानकारी देती है।

वनस्पति जगत् में ताक-झाँक - 1

बिन पत्ती सब सून

किशोर पँवार

शृंखला सम्पादकः
सुशील जोशी

आवरणः प्रगति

ISBN: 978-81-89976-09-5

आकारः 7"x 9.5"

पृष्ठ संख्याः 54

वनस्पति जगत् में ताक-झाँक शृंखला की दूसरी पुस्तक जो फूलों के सम्पूर्ण जीवन से हमें परिचित कराती है। साथ ही यह पौधों के जीवनचक्र और उसमें फूलों की भूमिका की जानकारी भी प्रदान करती है।

वनस्पति जगत् में ताक-झाँक - 2

फूल से बीज तक

किशोर पँवार

शृंखला सम्पादकः
सुशील जोशी

चित्रः भारत जमरा

आवरण फोटोः
श्वेता भावसार

ISBN: 978-81-89976-78-1

आकारः 7"x 9.5"

पृष्ठ संख्याः 92

फूल से बीज तक

...फूल से बीज तक एक ऐसी ही पुस्तक है जो एक आम पाठक के लिए पौधे की सम्पूर्ण जीवन-यात्रा को सरल, सहज, रोचक लेकिन वैज्ञानिक तथ्यों के आलोक में प्रस्तुत करती है।

- नईदुनिया

सीखना... दिल से

...संयुक्ता के अनुभव उन युवाओं को एक नया रास्ता ज़रूर दिखा सकते हैं जो परम्परागत पढ़ाई के स्थान पर अपने दिल से कुछ अलग, कुछ अनोखा करने का सपना देखते हैं।

- उदंति

Story of Astronomy

The picture-book is not about the science of astronomy. It is an attempt to recount its evolution in the form of a story.

- Reader's Club Bulletin

रोशन सितारे

...कई मशहूर वैज्ञानिकों का जीवन भी हमारी ज़िन्दगी की तरह ही बहुरंगी है और इसी बहुरंगी जीवन से उन्होंने काम करने की प्रेरणा पाई है।

- नवभारत टाइम्स

गैर-कथा साहित्य

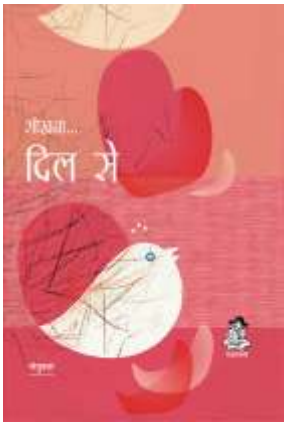

स्कूल की पढ़ाई पूरी होने के बाद कॉलेज में दाखिला न लेकर संयुक्ता ने आगे की पढ़ाई के लिए अपनी राह खुद बनाने का निर्णय लिया। इस क्रम में वह अनेक प्रकार की सम्भावनाओं की तलाश करती है। इस सफर में सीखना, करना और जीना साथ-साथ चलता है... दिल से...

सीखना... दिल से

संयुक्ता
आवरणः जितेन्द्र ठाकुर
ISBN: 978-81-89976-64-4
आकारः 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्याः 156

बचपन के पल... खेल-कूद, मस्ती, शरारत और अनुशासन को तोड़ने का मज़ा। दुनिया की कई महान शख्सियतों के बचपन की कहानी, उन्हीं की जुबानी। जिन्हें पढ़कर बच्चों को लगेगा कि बचपन में सब खूब शरारती थे और शरारतों का तरीका भी एक से एक था।

बड़ों का बचपन

संजीव ठाकुर
चित्रः दिलीप चिंचालकर
आवरणः जितेन्द्र ठाकुर
ISBN: 978-81-89976-62-0
आकारः 5.5"x 8.5"
पृष्ठ संख्याः 180

किशोरावस्था में स्वास्थ्य, सामाजिक परिवेश के बारे में कितने प्रश्न मन में होते हैं जिनके उत्तर अक्सर नहीं मिलते। ऐसी ही सारी बातों पर महत्वपूर्ण जानकारियाँ इस किताब में हैं। हर लड़की, हर महिला की सच्ची संगिनी है यह किताब।

बेटी करे सवाल

अनु गुप्ता
डिज़ाइन व चित्रः कैरन हेडॉक
ISBN: 978-81-87171-18-9
आकारः 8.5"x 11"
पृष्ठ संख्याः 80

बड़ों का बचपन
लेखक ने बच्चों की समझ में आने वाली सहज सरल भाषा में हर व्यक्तित्व का कोई रोचक और अलग-सा प्रसंग कथा में ढालकर तैयार किया है।

- इंडिया टुडे

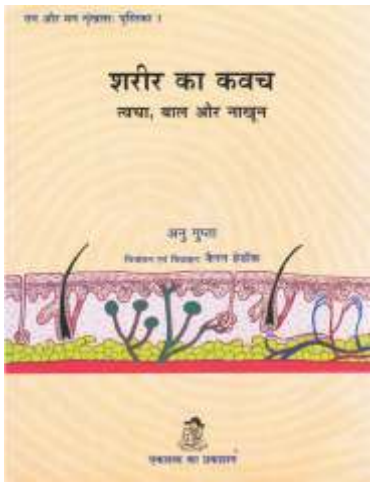

त्वचा, बाल और नाखून हमारे शरीर के आन्तरिक अंगों को सुरक्षा देते हैं। यह किताब इनकी संरचना, शरीर में इनकी भूमिका और हमारे स्वास्थ्य के साथ इनके सम्बन्ध की पड़ताल करती है। सरल भाषा में वैज्ञानिक व स्वास्थ्य पहलुओं के साथ ही चमड़ी के रंग पर आधारित भेदभाव जैसे सामाजिक-राजनैतिक सरोकारों को भी यह टटोलती है। कक्षा के अन्दर व बाहर, दोनों जगह उपयोगी किताब।

शरीर का कवच

त्वचा, बाल और नाखून

अनु गुप्ता

चित्र एवं डिज़ाइनः कैरन हेडॉक

ISBN: 978-81-89976-15-6

आकारः 8.5”x 11”

पृष्ठ संख्याः 32

स्वस्थ रहने की शुरुआत होती है अपने शरीर को जानने और समझने से। मानव शरीर के दस तंत्रों - चलने-फिरने, देखने-सोचने, साँस लेने-जीवित रहने - की संरचना, उनके कार्य और तंत्रों के आपसी तालमेल को सरल शब्दों में बताया गया है। साथ में दिए रंगीन चित्र बच्चों और बड़ों को शरीर की कार्यप्रणाली को जानने-समझने में मदद करेंगे।

मानव शरीर की तस्वीर

अनु गुप्ता व कैरन हेडॉक

चित्रः कैरन हेडॉक

ISBN: 978-81-89976-74-3

आकारः 8”x11”

पृष्ठ संख्याः 32

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध

Human body systems

ISBN: 978-81-89976-73-6

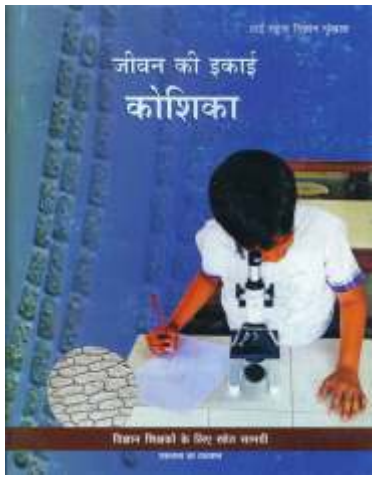

जीवन का आरम्भ कैसे होता है? कोशिका क्या है? जीवन के विकास में कोशिका का क्या महत्व है? जीव विज्ञान के अध्ययन/अध्यापन में सहायक इस पुस्तक में कोशिका के अध्ययन का इतिहास, सूक्ष्मदर्शी, स्टेनिंग आदि का सुस्पष्ट चित्रों सहित वर्णन है। विज्ञान शिक्षकों तथा उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी किताब।

जीवन की इकाई कोशिका

डिज़ाइनः आमोद कारखानिस

ISBN: 978-81-916971-4-9

आकारः 8”x11”

पृष्ठ संख्याः 72

शिक्षा साहित्य

जॉन होल्ट के झकझोरने वाले सवाल, समरहिल और अन्य कुछ लोकतांत्रिक विद्यालयों के अनुभवों की दास्तान, बाल मनोविज्ञान की झलकें, स्कूल को बच्चों और समुदाय के जीवन से जोड़ने के प्रयास...। शिक्षकों, शिक्षाशास्त्रियों, विद्यालय प्रबन्धकों व अभिभावकों के लिए शिक्षा की परतों को खोलने वाला क्लासिकल साहित्य।

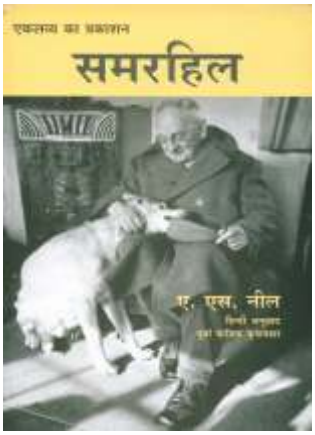

समरहिल एक ऐसा स्कूल है जिसमें बच्चे जैसे हैं वैसे ही होकर जी पाते हैं। जहाँ बच्चे आत्मसंचालित और स्वनिर्देशित होते हैं। एक ऐसा स्कूल जिसने सारी दुनिया के मुख्यधारा के स्कूलों के ढाँचे, पाठ्यक्रम तथा शिक्षाशास्त्र पर सवाल उठाया और अनेक वैकल्पिक स्कूलों का मार्ग प्रशस्त किया। समरहिल की कहानी उसके संस्थापक ए. एस. नील की ज़ुबानी...

समरहिल

ए. एस. नील

अँग्रेज़ी से अनुवादः

पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

ISBN: 978-81-87171-60-7

आकारः 5.5" x 8.5"

पृष्ठ संख्याः 320

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध

Summerhill

ISBN: 978-81-89976-02-6

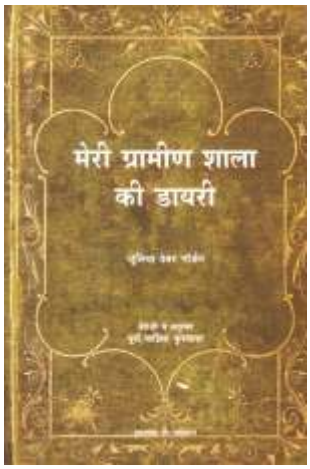

यह किताब दर्शाती है कि शिक्षक का लेखन कितना सशक्त, उद्देश्यपूर्ण एवं उपयोगी हो सकता है। जूलिया वेबर गॉर्डन ने सुदूर स्थित विपन्न ग्रामीण इलाके की शाला में न केवल पढ़ाने की चुनौती स्वीकारी वरन् हर उल्लेखनीय कार्य व घटना का ब्यौरा भी अपनी डायरी में दर्ज किया। शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत प्रत्येक व्यक्ति के लिए पठनीय व प्रेरणादायी किताब।

मेरी ग्रामीण शाला की डायरी

जूलिया वेबर गॉर्डन
अँग्रेज़ी से अनुवादः
पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
आवरणः परशुराम
ISBN: 978-81-89976-68-2
आकारः 5.5" X 8.5"
पृष्ठ संख्याः 308

अलग-अलग देशों में शिक्षा को अर्थपूर्ण और सही मायने में लोकतांत्रिक बनाने के प्रयोगों की कहानी उसे साकार करने वालों की ज़ुबानी। अपने राष्ट्र या समुदाय में विद्यालयों को बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत शिक्षाशास्त्रियों, सामुदायिक दलों, सरकारी कर्मचारियों, राष्ट्रीय शिक्षा यूनियनों और स्वयंसेवी संस्थाओं ने इस पुस्तक को उपयोगी पाया है।

लोकतांत्रिक विद्यालय

सम्पादनः माइकल डब्ल्यु. एपल
व जेम्स ए. बीन
अँग्रेज़ी से अनुवादः स्वयंप्रकाश
आवरणः अनिता वर्मा
ISBN: 978-81-87171-97-3
आकारः 5.5" X 8.5"
पृष्ठ संख्याः 136

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
Democratic Schools
ISBN: 978-81-87171-75-1

समरहिल

समरहिल की यह कहानी ए. एस. नील के चालीस वर्षों के शैक्षिक अवलोकन व प्रयोग का दस्तावेज़ है। ...ए. एस. नील ने यह पुस्तक लिखकर अत्यन्त कठोर और पारम्परिक ढंग के सख्त मिज़ाज अभिभावकों की आँखें खोलने का काम किया है।

- हिन्दुस्तान

मेरी ग्रामीण शाला की डायरी

सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के लिए तो यह गीता और कुरान हो ही सकती है।

- इंडिया टुडे

...यह 'डायरी' बच्चों के साथ सीखने-सिखाने के काम में लगे शिक्षकों को डायरी लिखने का एक विचार देती है।

- जनसत्ता

Democratic Schools

...the book's significance lies in its ability to inspire and remind educational practitioners about the central role they play in students' lives...

- The Book Review

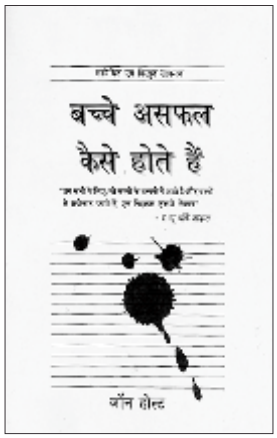

जॉन होल्ट बच्चों को कोरी स्लेट नहीं मानते, बल्कि कहते हैं कि स्कूल बच्चों की मेधा का विनाश कर देते हैं। विश्व में क्लासिक का दर्ज़ा प्राप्त यह किताब जब सन् 1964 में (मूल अँग्रेज़ी संस्करण) प्रकाशित हुई तो शिक्षा में सुधार को लेकर एक अन्तर्राष्ट्रीय बहस शुरू हुई। शिक्षकों, छात्रों, शिक्षाविदों व अभिभावकों के लिए रोचक ही नहीं एक आवश्यक किताब।

बच्चे असफल कैसे होते हैं

जॉन होल्ट

अँग्रेज़ी से अनुवादः

पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

ISBN: 978-81-89976-54-5

आकारः 5.5" X 8.5"

पृष्ठ संख्याः 288

स्कूली तंत्र की सीमाओं और अक्षमताओं को उजागर करते हुए होल्ट कहते हैं, "अगर बच्चा खुद को शिक्षित कर रहा है, क्योंकि कोई और उसे शिक्षित नहीं करेगा, तो वह स्कूली संसाधनों को, किसी वयस्क की ही भाँति, जब और जैसे चाहे इस्तेमाल करने के लिए स्वतंत्र हो। सीखने की अनन्त राहें हैं; सीखने वाला अपना पथ खुद खोजने, चुनने, बनाने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र हो।" शिक्षकों, छात्रों, शिक्षाविदों व अभिभावकों के लिए अवश्य पठनीय किताब।

असफल स्कूल

जॉन होल्ट

अँग्रेज़ी से अनुवादः अरविन्द गुप्ता

आवरणः रुस्तम सिंह

ISBN: 978-81-87171-77-5

आकारः 5.5" X 8.5"

पृष्ठ संख्याः 188

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध

The Under-achieving School

ISBN: 978-81-87171-65-2

असफल स्कूल

जब बच्चों से लेकर बड़ों तक की शब्दावली में स्कूल सबसे अहम शब्द बन चुका हो, तब शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत एकलव्य ने प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री जॉन होल्ट की... पुस्तक का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करके हम सबको इस शब्द की परिभाषा पर नए सिरे से विचार करने को प्रेरित किया है।

- मीरा भाईंदर दर्शन

शिक्षा के सरोकार कितने वृहत्तर हो सकते हैं, इसे बरास्ते *'असफल स्कूल'* बखूबी समझा जा सकता है।

- शिक्षा विमर्श

शिक्षा के मुद्दे पर हमारा समाज जिस अव्यवस्था, अँधेरे और हताशा से गुज़र रहा है वहाँ ऐसी पुस्तकें ही रास्ता दिखा सकती हैं।

- कथादेश

यह किताब करने के पक्ष में है – यानी स्व-निर्देशित, उद्देश्यपूर्ण व सार्थक जीवन और काम के पक्ष में – और "शिक्षा" के विरुद्ध है – यानी सक्रिय जीवन से कटकर घूस, लालच या भय के दबाव में सीखने के विरुद्ध। असफल स्कूल में स्कूली तंत्र की सीमाओं को सामने लाने के बाद इस किताब में होल्ट "शिक्षा", सिखाने के प्रचलित तरीकों व उसके शिक्षाशास्त्र पर बुनियादी सवाल उठाते हैं।

शिक्षा की बजाय

जॉन होल्ट
अँग्रेज़ी से अनुवादः सुशील जोशी
आवरणः नीरा अग्रवाल
ISBN: 978-81-87171-96-6
आकारः 5.5" X 8.5"
पृष्ठ संख्याः 268

जॉन होल्ट की अन्तिम कृति। शिक्षा जगत् की एक और क्लासिक। बचपन की रूढ़ छवि पर सवाल करते हुए उसकी स्वाभाविक प्रकृति, स्वरूप और सम्भावनाओं की पड़ताल करती किताब। यह बच्चों की ओर देखने की एक सुसंगत, समतापूर्ण व लोकतांत्रिक दृष्टि प्रदान करती है। अभिभावकों, शिक्षकों व स्कूल प्रशासकों के लिए नितान्त ज़रूरी किताब।

बचपन से पलायन

जॉन होल्ट
अँग्रेज़ी से अनुवादः
पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
ISBN: 978-81-87171-63-8
आकारः 5.5" X 8.5"
पृष्ठ संख्याः 240

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
Escape from childhood
ISBN: 978-81-87171-46-1

शिक्षा की बजाय

...समाज को बेहतर बनाने के लिए शिक्षा को बेहतर बनाने की बात जब कभी होगी होल्ट जैसे विचारक तब शिद्दत से याद किए जाएँगे और '*शिक्षा की बजाय*' जैसी किताबों का पाठ तब बहुत ज़रूरी हो जाएगा।

- संडे, नईदुनिया

बचपन से पलायन

...यह पुस्तक बच्चों और बाल्यावस्था के सन्दर्भ में सोचने के नए द्वार खोलती है।

- राज्य की नईदुनिया

शोध और दस्तावेज़

एकलव्य तथा अन्य शैक्षिक संस्थाओं या अध्येताओं के ज़मीनी कार्य तथा शोध से विकसित सर्वकालिक उपयोगी सामग्री। शिक्षकों, शिक्षा में शोध करने वालों तथा शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत् हर व्यक्ति के लिए उपयोगी पुस्तकें।

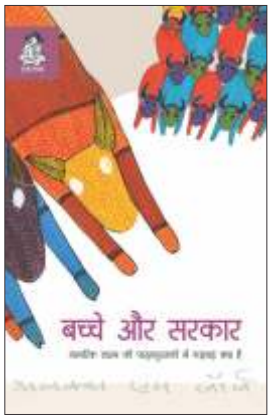

एकलव्य के सामाजिक विज्ञान समूह द्वारा नागरिक शास्त्र के वैकल्पिक पाठ्यक्रम की परिकल्पना के फलस्वरूप विकसित यह किताब स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों और छात्रों के दिमाग में उसकी समझ के बीच के अन्तर को रेखांकित करती है।

बच्चे और सरकार

अलक्स एम. जॉर्ज
आवरण चित्रः दुर्गाबाई व्याम
आवरण डिज़ाइनः
जितेन्द्र ठाकुर
ISBN: 978-81-89976-57-6
आकारः 5.5" X 8.5"
पृष्ठ संख्याः 96

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
Children's perception of Sarkar
ISBN: 978-81-89976-10-1

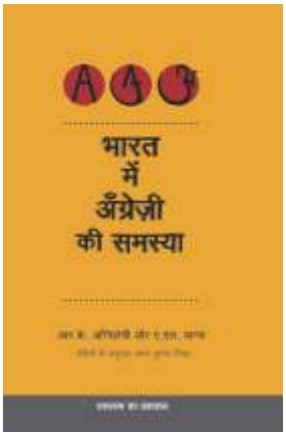

रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में लोग अँग्रेज़ी भाषा का उपयोग कितना और किस प्रकार करते हैं? अँग्रेज़ी को लेकर आम लोगों की धारणाएँ और आकांक्षाएँ क्या हैं? एक वृहत सर्वेक्षण के माध्यम से ऐसे कई सवालों पर यह किताब रोशनी डालती है।

भारत में अँग्रेज़ी की समस्या

आर.के. अग्निहोत्री और
ए.एल. खन्ना
अँग्रेज़ी से अनुवादः
बरुण कुमार मिश्रा
आवरणः बोस्की जैन
ISBN: 978-81-906871-9-4
आकारः 5.5" X 8.5"
पृष्ठ संख्याः 168

होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम में विज्ञान शिक्षण के नाम पर जानकारी के विस्फोट और परिभाषाओं की बजाय प्रयोग करने और अपने आसपास की जाँच-परख के ज़रिए अवधारणाएँ विकसित करने को पाठ्यक्रम की बुनियाद बनाया गया। इस कार्यक्रम के अकादमिक पक्षों का सम्पूर्ण लेखा-जोखा इस किताब में सँजोया गया है।

जश्न-ए-तालीम
सुशील जोशी
आवरणः जितेन्द्र ठाकुर
ISBN: 978-81-89976-18-7
आकारः 5.5" X 8.5"
पृष्ठ संख्याः 392

जश्न-ए-तालीम

इस पुस्तक का एक-एक शब्द इस भेद को खोलने में मदद करता है कि क्यों हमारी शिक्षा तर्कशील नागरिक पैदा नहीं कर पा रही। ...सचमुच शिक्षा प्रामाणिक अनुभवों, गलतियों, उपलब्धियों का सच्चा बयान ही तो है और इसलिए यही *जश्न-ए-तालीम* शिक्षा की ढेरों बासी किताबों के बीच बेमिसाल नज़र आती है।

- हंस

सुशील जोशी की यह किताब उन लोगों के लिए ज़रूरी सन्दर्भ है जो शिक्षा को जीवन-जगत् में परिवर्तन का रचनात्मक माध्यम मानते हैं।

- शिक्षा विमर्श

...it also stands as a unique landmark of critical intervention in the public education system – an intervention that has served in many ways to transform the landscape of the mainstream educational discourse.

- Contemporay Education Dialogue

शिक्षकों के लिए

बाल-केन्द्रित, गतिविधि-आधारित शिक्षण और विषय की विशेषताओं व गहराइयों को साथ लेकर चलने वाली ये किताबें शिक्षकों के लिए खास मददगार हैं। ये कक्षा में सीखने और सिखाने के तरीके को समृद्ध करेंगी।

स्कूलों में बच्चों को गणित अक्सर दुरूह व नीरस विषय प्रतीत होता है। लेकिन शिक्षक चाहें तो जीवन के अनुभवों और गतिविधियों के माध्यम से इसे सरल व सरस विषय बना सकते हैं। इसके कुछ तरीके इस किताब में सुझाए गए हैं। माध्यमिक व उच्च माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थी स्वयं भी इस किताब का उपयोग कर सकते हैं।

गणित की गतिविधियाँ

जेन पोर्टमेन,
जेरेमी रिचर्डसन
अँग्रेज़ी से अनुवादः
अरविन्द गुप्ता

ISBN: 978-81-87171-41-6

आकारः 8.25"X11"
पृष्ठ संख्याः 112

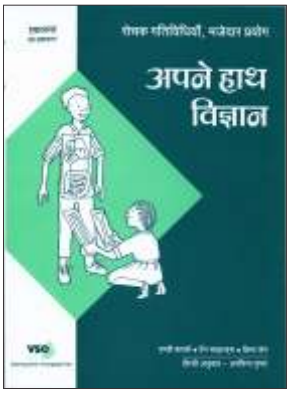

विज्ञान करने का विषय है, कक्षा में पंक्तिबद्ध बैठकर या केवल पाठ्यपुस्तक पढ़कर इसे समझा नहीं जा सकता। विज्ञान की गतिविधियों और प्रयोगों की यह विश्वप्रसिद्ध किताब विज्ञान सिखाने के तरीके सुझाती है। शिक्षकों के लिए उपयोगी व मार्गदर्शक तथा माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए एक रोचक उपहार।

अपने हाथ विज्ञान

एण्डी बायर्स, ऍन चाइल्ड्स,
क्रिस लेन
अँग्रेज़ी से अनुवादः
अरविन्द गुप्ता

ISBN: 978-81-87171-36-2

आकारः 8.25"X11"
पृष्ठ संख्याः 128

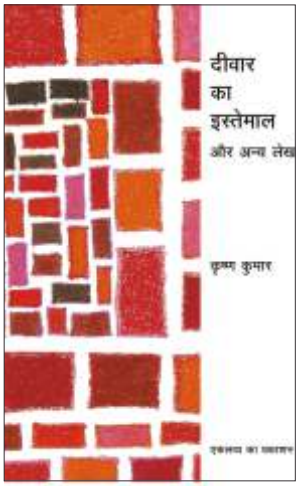

कृष्ण कुमार का नाम भारत के शैक्षिक जगत् में जाना-माना है। वे कहते हैं कि शिक्षा की समस्याएँ सिर्फ शिक्षा की नहीं हैं, वे समाज और राज्य की संरचना और समस्याओं से भी जुड़ी हैं। शिक्षकों को समर्पित यह किताब स्कूलों में और उनके इर्द-गिर्द पेश आने वाली उन छोटी नज़र आने वाली बड़ी समस्याओं की पड़ताल करती है जो मूलतः व्यापक शैक्षिक विमर्श का बुनियादी हिस्सा हैं।

दीवार का इस्तेमाल और अन्य लेख

कृष्ण कुमार

आवरणः रुस्तम सिंह

ISBN: 978-81-89976-11-8

आकारः 5.5”X8.5”

पृष्ठ संख्याः 112

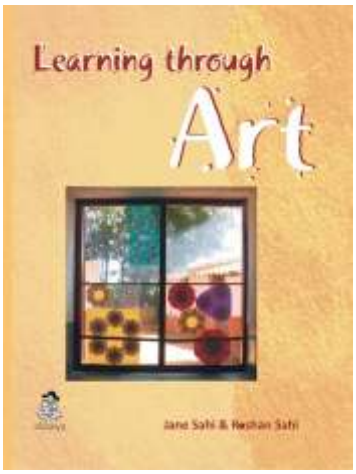

In this resource book for primary school teachers art is perceived as an active way of learning and sharing and not as something additional to the normal curriculum. The activities are designed to include all children and enrich regular lessons of language, math and environmental studies through the approach path of art.

Learning through Art

Jane Sahi

Photographs and layout-design: Roshan Sahi

ISBN: 978-81-89976-26-2

Size: 8.5”X11”

Pages: 168

दीवार का इस्तेमाल

...जिन छोटी बातों से शिक्षा के मौजूदा खूँखार चेहरे को बदला जा सकता है वह कैसे कम से कम शब्दों और बगैर वैचारिक भटकाव या उलझाव के शिक्षकों, बच्चों और आम आदमी तक पहुँचे, यही मंशा है।

- जनसत्ता

...यह पुस्तक इस देश की शिक्षा-व्यवस्था के विभिन्न पक्षों पर सवालिया निशान लगाती है। शासन, प्रशासन, समाज, स्कूल, शिक्षा, माता-पिता सभी यहाँ कठघरे में खड़े हैं।

- अमर उजाला

Learning through Art

The book emphasizes that the senses are vital catalysts in gaining knowledge of the self and the outside world.

- Teacher Plus

कविताएँ, कहानियाँ और गीत बचपन का एक अभिन्न अंग हैं। इनसे बच्चे की कल्पनाशीलता और मौज दोनों को जगह मिलती है। 3 साल से बड़े बच्चों के लिए लिखी गई ऐसी ही कुछ खास किताबों की जानकारी और अच्छे बाल साहित्य को चुनने के आधारों पर चर्चा पढ़ें।

3+

तीन से आठ साल के बच्चों के लिए चुनिन्दा किताबें

आकल्पन व समन्वयनः
अंजलि नरोना
चयन व समीक्षाएँः अरविन्द जैन, चन्द्रप्रकाश कड़ा, वीणा भाटिया
ISBN: 978-81-89976-14-9
आकारः 5.5"X8.5"
पृष्ठ संख्याः 80

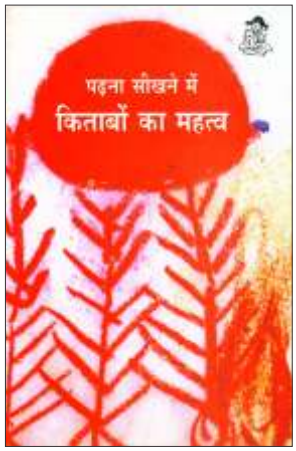

लाइब्रेरी में उपलब्ध किताबें बच्चों के सामने अनन्त संसार की खिड़कियाँ खोलने का काम करती हैं। जब अभिभावक या शिक्षक बच्चों को कहानी या कविता सुनाते हैं तो बच्चे लिखाई के उलटे-सीधे से परिचय पाते हैं। कहानियों के माध्यम से वे अपने आस-पास और दूर-दराज़ के जीवन, रहन-सहन को जान पाते हैं। यह लाइब्रेरी मार्गदर्शिका बताती है कि और किस-किस तरह से किताबों का उपयोग शिक्षण को समृद्ध बनाने के लिए किया जा सकता है।

पढ़ना सीखने में किताबों का महत्व

आलेखः अंजलि नरोना, वीणा भाटिया, तान्या सहगल
सम्पादनः रश्मि पालीवाल व शशि सबलोक
ले-आउटः शशि सबलोक
ISBN: 978-81-89976-25-5
आकारः 5.5"X8.5"
पृष्ठ संख्याः 40

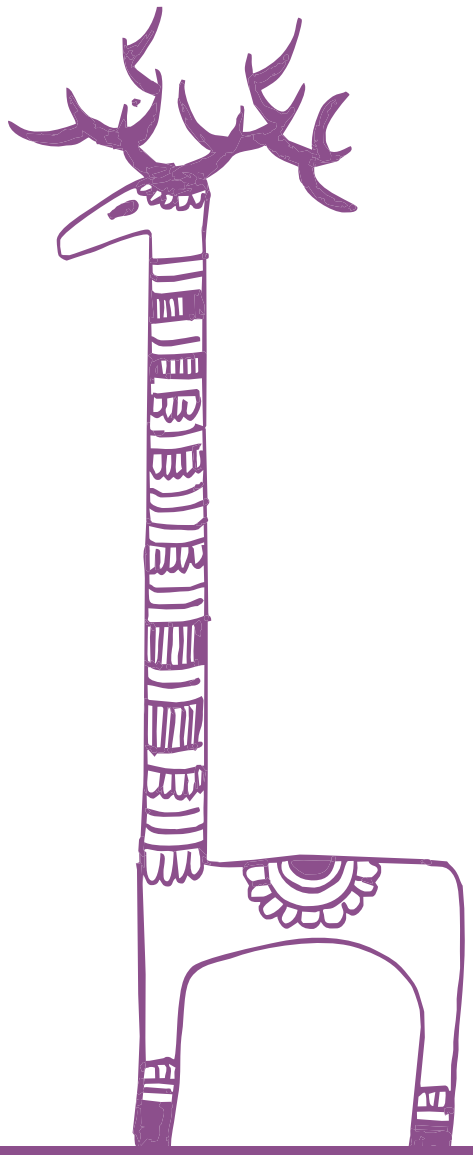

प्राथमिक शिक्षा

एकलव्य ने प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (प्राशिका) की शुरुआत प्राथमिक स्तर की स्कूली शिक्षा में गुणात्मक बदलाव लाने के उद्देश्य से की थी। इस स्तर के बच्चों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से प्राशिका पैकेज में भाषा और गणित की क्षमताओं और संज्ञानात्मक व भावात्मक हुनरों पर ध्यान केन्द्रित किया गया। खुशी-खुशी नामक कार्य-पुस्तिकाएँ इस पैकेज की केन्द्रीय पाठ्यसामग्री हैं जो कक्षा 1 से 5 तक की भाषा, गणित और पर्यावरण शिक्षण की आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। इसके अलावा है कार्डों का पिटारा - यानी शब्द, चित्र, अक्षर, मात्रा व संख्याओं के 500 से ऊपर कार्डों का एक जखीरा जिससे बच्चों से भाषा व गणित शिक्षण की कई रोचक गतिविधियाँ करवाई जा सकती हैं।

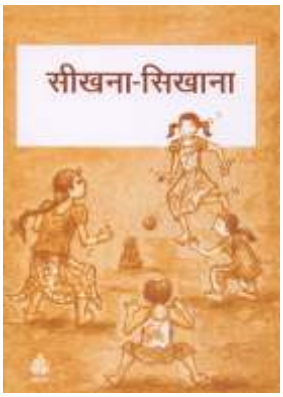

खेल-खेल में बच्चे मज़े से सीखते हैं, चाहे वह गणित हो या भाषा। महत्वपूर्ण यह है कि बच्चों पर सीखने का दबाव न हो और उन्हें चीज़ों से खेलने, तोड़ने-मरोड़ने की आज़ादी हो। प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के अनुभवों से तैयार इस किताब में भाषा और गणित सीखने और सिखाने के शुरुआती चरणों के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। साथ ही कक्षा में बच्चों के साथ करने के लिए गतिविधियाँ भी दी गई हैं।

सीखना सिखाना
आवरण: जितेन्द्र ठाकुर
ISBN: 978-81-87171-05-8
आकार: 7" X 9.5"
पृष्ठ संख्या: 68

स्कूली शिक्षा की पहली पायदान पर बच्चों को छोटी कहानियों, कविताओं, फलों-फूलों जैसी चीज़ों के ज़रिए भाषा और गणित से मिलवाती किताब।

खुशी-खुशी कक्षा 1
ISBN: 978-81-87171-56-0
आकार: 8.5" X 11"
पृष्ठ संख्या: 44

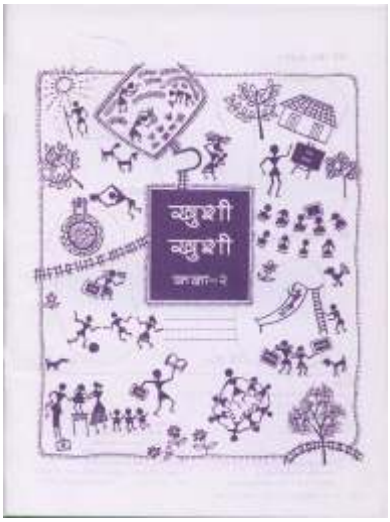

एक रोचक पाठ्य व कार्य पुस्तिका। प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए बढ़िया गतिविधियों का भण्डार।

खुशी-खुशी कक्षा 2

ISBN: 978-81-87171-57-7

आकार: 8.5" X 11"

पृष्ठ संख्या: 96

कहानी-कविता के साथ-साथ साहित्य के कुछ अन्य रूपों, जैसे पहेलियों, पत्र आदि से परिचय। साथ ही अपने आसपास की दुनिया की खोजबीन करते हुए चीज़ों के आकारों को पहचानना, नापना, महसूस करना जैसी कई गतिविधियाँ।

खुशी-खुशी कक्षा 3 भाग 1

ISBN: 978-81-87171-69-0

आकार: 8.5" X 11"

पृष्ठ संख्या: 88

आसपास की नई चीज़ों की पड़ताल, आकारों को पहचानना। भाषा से कुछ और संवाद। भिन्न की जानकारी के साथ हल्का-फुल्का भाग। तीसरी कक्षा में आखिर अंकों की दुनिया का फैलाव हो रहा है।

खुशी-खुशी कक्षा 3 भाग 2

ISBN: 978-81-87171-70-6

आकार: 8.5" X 11"

पृष्ठ संख्या: 88

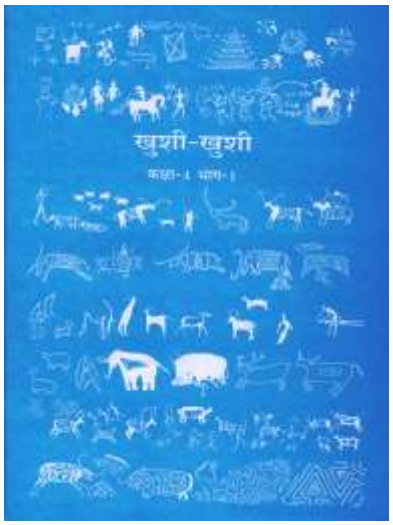

भाषा शिक्षण की इस किताब में बच्चे चित्र और शब्दों वाली कहानियाँ पढ़कर, अधूरी कहानियों को पूरा करके, और प्रश्नों के उत्तर ढूँढकर भाषा से दोस्ती पक्की कर लेंगे।

खुशी-खुशी कक्षा 4 भाग 1

ISBN: 978-81-87171-71-3

आकार: 8.5" X 11"

पृष्ठ संख्या: 100

जैसे-जैसे बच्चे बड़ी कक्षाओं में जाते हैं गणित की दुनिया में ठोस अनुभवों से आगे बढ़कर अमूर्त अंकों और इकाई-दहाई जैसी अवधारणाओं से रूबरू होते हैं। इस किताब की मदद से वे ज्यामितीय आकारों को पहचानने, बनाने, तुलना करने और नापने भी लगेंगे।

खुशी-खुशी कक्षा 4 भाग 2

ISBN: 978-81-87171-72-0

आकार: 8.5" X 11"

पृष्ठ संख्या: 120

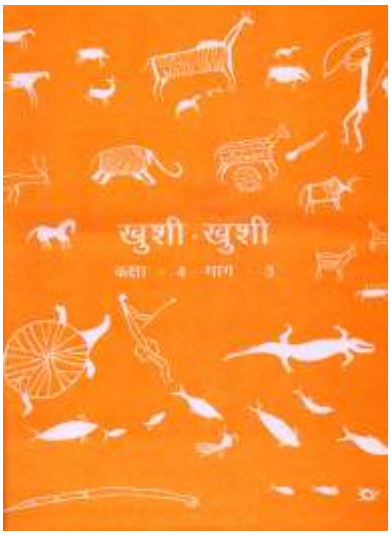

कैसे बना पहिया? कितने तरह के होते हैं पक्षी? मौसम तीन हैं या चार? कैसे-कैसे जंगल? कुछ बातें इतिहास की और कुछ पर्यावरण की। परिवेश से बच्चों को मिलवाती इस किताब में जानकारियाँ बच्चों की अवलोकन क्षमता को सूक्ष्म बनाने में मददगार होंगी।

खुशी-खुशी कक्षा 4 भाग 3

ISBN: 978-81-87171-73-7

आकार: 8.5" X 11"

पृष्ठ संख्या: 116

अभिव्यक्ति की क्षमता को बढ़ाने के लिए पाठों में कई तरह की गतिविधियाँ दी गई हैं। इस तरह पाँचवीं तक आते-आते भाषा एक दोस्त बन गई। अब अपनी बात कहने में इसका खूब उपयोग करेंगे बच्चे। यह किताब ऐसे कई अभिव्यक्ति के मौके देगी।

खुशी-खुशी कक्षा 5 भाग 1

ISBN: 978-81-89976-04-0

आकार: 8.5" x 11"

पृष्ठ संख्या: 102

गणित की दुनिया फैलने के साथ-साथ अब जटिल भी होती जा रही है। पर ठोस उदाहरणों और गतिविधियों से करें तो दशमलव और भिन्न भी हमारे दोस्त बन सकते हैं।

खुशी-खुशी कक्षा 5 भाग 2

ISBN: 978-81-89976-05-7

आकार: 8.5" x 11"

पृष्ठ संख्या: 124

पर्यावरण की यह किताब हमारे आस-पास से आगे बढ़कर कभी मानव शरीर के अन्दर झाँकती है तो कभी दूर-दराज़ के राज्यों की सैर पर निकल जाती है। बच्चे कदम-दर-कदम परिचित से अपरिचित को जान रहे हैं।

खुशी-खुशी कक्षा 5 भाग 3

ISBN: 978-81-89976-06-4

आकार: 8.5" x 11"

पृष्ठ संख्या: 120

चित्रों, तुकबन्दियों, छोटी-छोटी कहानियों और ढेर-सारी रोचक गतिविधियों के ज़रिए प्राथमिक स्तर के बच्चे इस कार्य-पुस्तिका के रास्ते भाषा से अपनी दोस्ती को और गाढ़ी कर पाएँगे।

पढ़ो लिखो मज़ा करोः भाग 1

ISBN: 978-81-87171-81-2

आकारः 7" X 9.5"

पृष्ठ संख्याः 44

भाषा सीखने में कविताओं और कहानियों की अहम भूमिका होती है। इनको भाव-भंगिमाओं के साथ गाने, कहने और तरह-तरह की गतिविधियाँ करने से भाषा के विविध आयामों से बच्चे खुद को आसानी से जोड़ पाते हैं। ऐसी ही कोशिश है हिन्दी की इस दूसरी कार्यपुस्तिका में।

पढ़ो लिखो मज़ा करोः भाग 2

ISBN: 978-81-87171-82-9

आकारः 7" X 9.5"

पृष्ठ संख्याः 44

संख्या कार्ड सेट

एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में विकसित इस कार्ड सेट में खेल का खेल और गणित सीखने का मज़ा है। इससे 1 से 99999 तक की कोई भी संख्या बनाई जा सकती है। साथ ही बड़ी संख्याओं का जोड़ या घटाना भी हो सकता है। इकाई, दहाई, सैकड़ा की अवधारणा पर पकड़ बनाने में भी इस सेट से मदद मिलती है।

ISBN: 978-81-89976-50-7

कार्डों का पिटारा

इस पिटारे में हैं अक्षर व मात्रा कार्ड, अंक व बिन्दु कार्ड, चित्र व शब्द कार्ड। इनसे प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों को भाषा व गणित की मूल अवधारणाओं से परिचय करवाने वाली कई गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं। इन कार्डों से 30 बच्चे एक साथ टोलियों में काम कर सकते हैं।

ISBN: 978-81-89976-49-1

सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम

एकलव्य का एक उद्देश्य छोटे, ज़मीनी स्तर पर शैक्षिक प्रयोग करके उसके परिणामों को बड़े पैमाने पर शिक्षा तंत्र में विस्तार देना है। इसी उद्देश्य से एकलव्य ने म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के साथ मिलकर सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम का विकास और कार्यान्वयन किया। सामाजिक अध्ययन पाठ्यपुस्तकों में तथ्यों के विवरण के साथ-साथ कई प्रकार के लोगों के जीवन की रोचक घटनाओं व अनुभवों को जगह दी गई है। इन पुस्तकों की कोशिश है कि बच्चे तथ्यों को रटने की बजाय सामाजिक परिस्थितियों और परिवर्तनों को समझें।

इतिहास क्या है? राजाओं-महाराजाओं की बातें, उनकी वंशावली, राजाओं के किए काम, युद्ध और सन्धियाँ या कुछ और भी? क्या बीते ज़माने में आम लोग नहीं होते थे? उनका जीवन, उनका रहन-सहन, उनके सुख-दुख क्या इतिहास नहीं? ऐसे ही कुछ सवालों से जूझते हुए इतिहास और उसके अध्ययन की समझ की पड़ताल करती किताब।

इतिहास क्या है?

सम्राट अशोक की सड़क

सी. एन. सुब्रह्मण्यम

चित्र: रश्मि पन्त

ISBN: 978-81-87171-33-1

आकार: 5" X 7"

पृष्ठ संख्या: 24

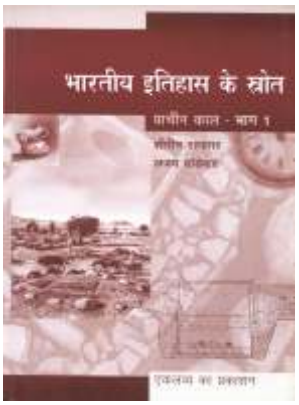

इतिहासकार इतिहास कैसे लिखते है? उन्हें कैसे पता कि भीमबैठका के शैलचित्र किस युग के हैं? और ताजमहल कब बना था? सामाजिक अध्ययन पढ़ाने वाले शिक्षकों के ऐसे ही कुछ सवालों से जूझते हुए इतिहास की अध्येता शीरीन रत्नागर ने भारतीय उदाहरण लेकर इतिहास में स्रोतों की भूमिका पर यह किताब रची। सामाजिक अध्ययन के शिक्षकों और इतिहास में रूचि रखने वाले हर पाठक के लिए एक अनूठा तोहफा।

भारतीय इतिहास के स्रोत

प्राचीन काल - भाग 1

शीरीन रत्नागर,

अजय दांडेकर

चित्र व डिज़ाइन:

तरुणदीप गिरधर

ISBN: 978-81-87171-40-9

आकार: 8.5" X 11"

पृष्ठ संख्या: 112

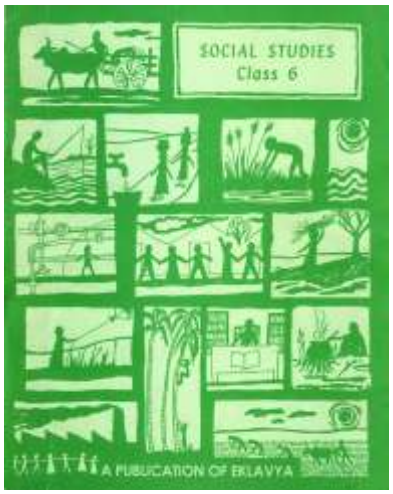

This textbook consists sections on History, Geography & Civics covering almost all the topics prescribed by CBSE and many state boards. Written in an appealing story-telling style, the section on history starts with life of the hunter-gatherers and travels through the times when agriculture began, to growth of villages, to development of cities upto the time of Ashoka. The section on Geography covers introductory physical geography and introduces Asia in detail. The Civics chapters discuss interdependence, village panchayat, public amenities in cities and district administration. The whole text is embedded with information boxes and questions that challenge our beliefs and force us to think beyond the obvious.

Social Studies Class 6

ISBN: 978-81-89976-55-2

Dimensions: 8.5”x11”

Pages: 204

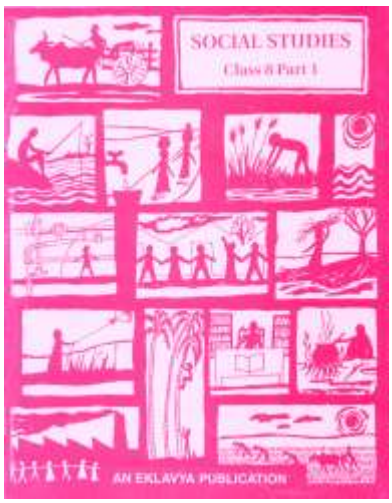

In this textbook meant for class 8th students, the chapters on History are focus on the Mughal Period and the lives of common people in those times. The Civics chapters deal with banks, taxes, fundamental rights and duties and the formulation and functioning of the central government. The Geography chapters teach about the temperature patterns and then go on to the details of physical geography of India.

The whole book is richly illustrated and full of activities that strengthen observation, comparison, logical thinking and critical questioning abilities in learners.

Social Studies Class 8 Part 1

Dimensions: 8.5”x11”

Pages: 204

सामाजिक अध्ययन कक्षा 6, 7, 8 (CD)

इस सी.डी. में दी गई पाठ्यपुस्तकें सामाजिक अध्ययन की पढ़ाई को विचारधाराओं की मौजूदा बहस से आगे ले जाकर शैक्षणिक सरोकारों के दायरे में रखने का प्रयास करती हैं। इतिहास, नागरिक शास्त्र और भूगोल के परिचित विषयों को इनमें कुछ ऐसे पेश किया गया है जिससे यह साफ झलकता है कि इसे पढ़ने वाले बच्चे न सिर्फ एक जीवन्त सामाजिक-राजनैतिक परिदृश्य का हिस्सा हैं, बल्कि वे इसे गढ़ने और इसे समझने की प्रक्रिया के सक्रिय किरदार भी हैं।

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध

क्या अपने संविधान को जान लेना ही अच्छे नागरिक बनना है? क्या संविधान में लिखे अधिकार रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में हमें मिल पाते हैं? क्या होता है जब इसकी कोशिश में जद्दोजहद होती है? ऐसे ही सवालों को टटोलते हुए नागरिक शास्त्र की पढ़ाई को तार्किक और संवेदनशील बनाने की एक कोशिश है इस किताब में।

हमारे संविधान में मूल अधिकार और कर्त्तव्य

चित्र व ले-आउटः
कैरन हेडॉक

ISBN: 978-81-87171-61-4

आकारः 8.5" x 11"
पृष्ठ संख्याः 20

यह किताब भूगोल की पढ़ाई को तापमान व मौसम के हमारे रोज़ के अनुभवों से जोड़कर जीवन्त बना देती है। माध्यमिक स्तर के बच्चे इसकी मदद से तापमान दर्ज करने से लेकर तापमान का नक्शा बनाने तक की गतिविधियाँ करते हुए अनुमान, तुलना और तर्क से सीखने का परिचय पाएँगे।

कितना ठण्डा? कितना गरम?

अँग्रेज़ी से अनुवादः उषा चौधरी
चित्र व ले-आउटः कैरन हेडॉक

ISBN: 978-81-89976-51-4

आकारः 8.5" x 11"
पृष्ठ संख्याः 16

www.eklavya.in

होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम

होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम अपनी मिसाल आप है। इस कार्यक्रम में प्रयास किया गया कि माध्यमिक कक्षाओं में करके सीखने और प्रयोग तथा अवलोकन आधारित तरीकों से विज्ञान पढ़ा और पढ़ाया जाए। 'बाल वैज्ञानिक' शीर्षक से पाठ्यपुस्तकों की शृंखला इस कार्यक्रम के तहत विकसित हुई। मध्य प्रदेश के 15 जिलों की लगभग 100 शासकीय शालाओं में इन्हीं का इस्तेमाल होता था। आज भी अनेक स्कूल, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान तथा गैर-सरकारी संगठन इनका उपयोग करते हैं।

विज्ञान किट की जानकारी के लिए देखें कवर 3

विज्ञान क्या है?

विज्ञान की प्रकृति और प्रक्रिया के बारे में अत्यन्त सरल और रोचक शैली में लिखी गई किताब जो इस गूढ़ विषय को समझने में हमारी मदद करती है।

विनोद रायना, डी.पी. सिंह
चित्रः सत्यनारायण लाल कर्ण
ISBN: 978-81-87171-32-4
आकारः 5" X 7"
पृष्ठ संख्याः 16

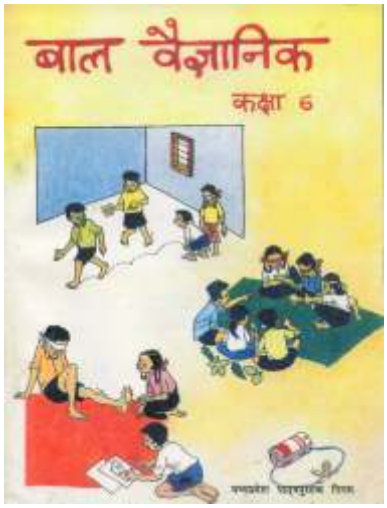

विज्ञान को रटने की बजाय करके सीखने वाला विषय बनाने की एक कोशिश है बाल वैज्ञानिक। मापन, समूहीकरण, चुम्बक, अम्ल और क्षार, जड़ और पत्ती जैसे विषयों सम्बन्धी अवलोकन और प्रयोग करते हुए बच्चे विज्ञान के सिद्धान्तों को सरलता से ग्रहण करते चलते हैं।

बाल वैज्ञानिक कक्षा-6

चित्रः रंजित बालमुचु

डिज़ाइनः तरुणदीप गिरधर

आकारः 8.5" x 11"

पृष्ठ संख्याः 154

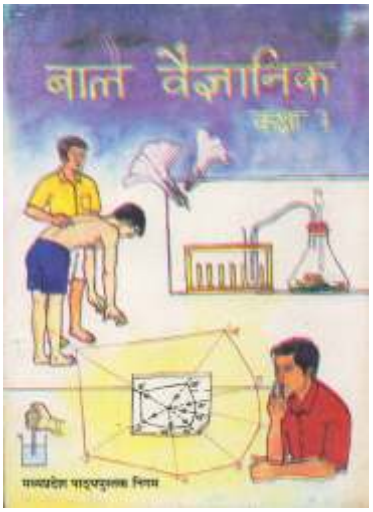

विज्ञान की पड़ताल करने वाले प्रयोग जिनके द्वारा बच्चे ध्वनि, आयतन, पौधों में प्रजनन, विद्युत परिपथ, श्वसन, फसलें जैसे विषयों के हर पहलु से परिचित होंगे। उनकी विश्लेषण करने की क्षमता भी बढ़ेगी। विज्ञान तो आखिर करके देखने का ही नाम है।

बाल वैज्ञानिक कक्षा-7

आकारः 8.5" x 11"

पृष्ठ संख्याः 230

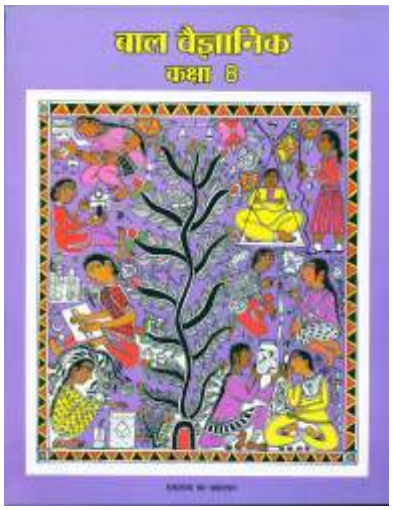

स्वतंत्र रूप से नए सवालों और समस्याओं की खोजबीन करने और प्रयोगों, अवलोकनों, तुलना, सवाल-जवाब और निष्कर्ष द्वारा अवधारणाओं तक पहुँचने में मदद करना इस किताब का उद्देश्य है। इस संशोधित संस्करण में गति व उसके ग्राफ, तराजू का सिद्धान्त, रासायनिक क्रियाएँ, गर्मी व तापमान, सजीव-निर्जीव जैसे विषयों का समावेश है।

बाल वैज्ञानिक कक्षा-8

चित्र एवं डिज़ाइनः कैरन हेडॉक

ISBN: 978-81-89976-56-9

आकारः 8.5" x 11"

पृष्ठ संख्याः 234

जनविज्ञान और जन सरोकार

इन किताबों में आप इतिहास और विज्ञान जैसे विषयों और समाज से उनके अन्तर्सम्बन्धों पर प्रामाणिक सामग्री पाएँगे। साथ ही पाएँगे जन सरोकार के मुद्दों को सामने लाती, पैने सवाल उठाती कविताओं और गीतों के संकलन।

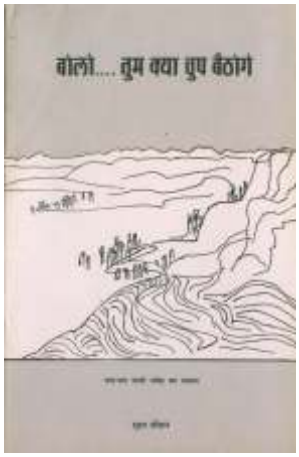

नर्मदा बता रही है अपनी कहानी। किस तरह से नीर के साथ कई सारी ज़िन्दगानियाँ बहती हैं। पर जब बाँध बन जाएगा, जब नदी ही न होगी तब क्या होगा?

बोलो... तुम क्या चुप बैठोगे

सुधा चौहान
चित्रः अमृतलाल वेगड़
आकारः 5.5" X 8.5"
पृष्ठ संख्याः 24

यह किताब भोपाल गैस काण्ड के बाद के वर्षों में जनजागरण के लिए बनाई गई एक पोस्टर प्रदर्शनी पर आधारित है। यह पाठकों को दुनिया के इस गहन औद्योगिक हादसे के कई पहलुओं के बारे में बताती है और अपने आसपास पल रहे और भोपालों की ओर नज़र रखने को भी उकसाती है।

जनविज्ञान का सवाल

ISBN: 978-81-89976-63-7
आकारः 10.5" X 8.5"
पृष्ठ संख्याः 42

तीन इतिहासकारों द्वारा लिखे गए तीन आलेख। ये वेदों के स्थान, आर्यों के इतिहास, हिन्दू धर्म की उत्पत्ति और हिन्दुत्व के नाम पर होने वाले आन्दोलनों के विभिन्न पक्षों की बड़ी बारीकी से जाँच करते हैं। वेदों को जानने वाले और न जानने वाले, दोनों ही पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

वेद, हिन्दू धर्म, हिन्दुत्व

कुमकुम रॉय, कुणाल चक्रबर्ती, तनिका सरकार

अँग्रेज़ी से अनुवादः स्वयंप्रकाश

आवरण तथा डिज़ाइनः दिलीप चिंचालकर

ISBN: 978-81-89976-28-6

आकारः 5.5" X 8.5"

पृष्ठ संख्याः 92

यह किताब निम्न माने जाने वाले समुदायों के साधारण कहे जाने वाले कामों में छिपे गहरे ज्ञान-विज्ञान, लगातार प्रयोग, कठिन परिश्रम और हुनर पर रोशनी डालती है। श्रम के महत्व और समाज में श्रम के गैर-बराबर बँटवारे पर सवाल उठाने और बदलाव लाने का प्रयास भी इसमें निहित है।

कुम्हार, धोबी, बुनकर, मोचीः हमारे समय में श्रम की गरिमा

कांचा आइलैया

अँग्रेज़ी से अनुवादः भरत त्रिपाठी

चित्रः दुर्गाबाई व्याम

कवर डिज़ाइनः इन्दु नायर

ISBN: 978-81-89976-47-7

आकारः 8.5" X 9"

पृष्ठ संख्याः 108

वेद, हिन्दू धर्म, हिन्दुत्व

बहुत गम्भीर विषय को बहुत आसान तरीके से बताने वाली यह किताब आम पाठकों के लिए भी उतनी ही उपयोगी है जितनी इतिहास, पुराण जानने वालों के लिए। ....यह किताब वेद, हिन्दू धर्म, हिन्दुत्व के सम्बन्ध में जनमानस में व्याप्त भ्रान्तियों को दूर करने की कोशिश करती दिखाई देती है।

- पाण्डुलिपि

श्रम की गरिमा

श्रम की गरिमा के मुद्दे से सरोकार रखने वाली किताबें न तो पाठ्यक्रमों में शामिल हैं और न ही उसके बाहर उपलब्ध हैं।

- इंडिया टुडे

भारत तो आज़ाद हुआ पर क्या देश के लोग आज़ाद हो पाए हैं? वे आज भी अपनी आज़ादी और गरिमामय जीवन के लिए लड़ रहे हैं। ऐसे ही जीवन संघर्षों में गाए जाने वाले जोश से भरपूर 50 से ज़्यादा गीत, जिनमें संवेदनशीलता व सहजता से समता, गरिमा और इन्सानी हक के मुद्दे उठाए गए हैं।

जवाब दर सवाल

चित्रांकनः कैरन हेडॉक

ISBN: 978-81-87171-17-1

आकारः 3.5" X 9"

पृष्ठ संख्याः 88

प्रतिध्वनि एक संस्कृतिकर्मियों का समूह है जिसने पिछले लगभग 3 दशक से देश भर के सामाजिक सरोकार के आन्दोलनों को गीत, नाटक जैसी सांस्कृतिक पहल के ज़रिए सहयोग दिया है। इन्हीं प्रयासों से गाँव की मिट्टी का सौंधापन और खट्टे-मीठे अनुभव लिए ये गीत इकट्ठा हुए। हिन्दी सहित नौ भाषाओं के जनगीतों का संकलन।

बोल अरी ओ धरती बोल
व अन्य गीत

संकलनः प्रतिध्वनि, दिल्ली

ISBN: 978-81-87171-10-2

आकारः 3.5" X 9"

पृष्ठ संख्याः 68

कबीर की वाणी मालवांचल में आज भी गाई जाती है। उनके भजनों के ज़रिए भेदभाव, छुआछूत जैसी बुराइयों को दूर करने का सतत प्रयास जारी है और समाज में समता की कोशिशें भी। गाँव-गाँव में मौजूद इन्हीं कबीर भजन मंडलियों के साथ मिलकर तैयार हुआ है यह संग्रह।

कबीरा सोई पीर है
जो जाणे पर पीर

चित्रः मनोज कुलकर्णी

ISBN: 978-81-87171-59-1

पृष्ठ संख्याः 29

आकारः 5.5" X 8.5"

Science in History

This monumental work was the first full scale attempt to analyse the reciprocal relations of science and society throughout history, from the perfection of the flint hand axe to the hydrogen bomb. In this remarkable study Bernal illustrates the impetus given to (and the limitations placed upon) discovery and inventions by pastoral, agricultural, feudal, capitalist and socialist systems, and conversely the ways in which science has altered economic, social, and political beliefs and practices.

J. D. Bernal
Dimensions: 5.5" x 8.5"

Volume 1
The Emergence of Science
ISBN: 978-93-81300-34-3

Volume 2
The Scientific and
Industrial Revolutions
ISBN: 978-93-81300-35-0

Volume 3
The Natural Sciences
of our Time
ISBN: 978-93-81300-36-7

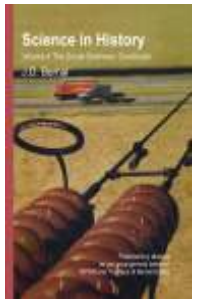

Volume 4
The Social Sciences:
Conclusion
ISBN: 978-93-81300-37-4

यह किताब अँग्रेज़ी में प्रकाशित ए लेपर्सन्स गाइड टु मेडिसिन का अनुवाद मात्र नहीं है। यह उसका संशोधित व परिवर्धित संस्करण है। यह किताब लोगों को दवाइयों के क्षेत्र में व्याप्त संकट के प्रति सचेत करने की कोशिश है। यह संकट उन दवा नीतियों का परिणाम है जो सारे लोगों के हितों के खिलाफ हैं। भारत के दवा उद्योग और स्टॉक मार्केट तो चमक रहे हैं, उछल रहे हैं मगर कुल मिलाकर यह प्रचुरता में अभाव की दास्तान है।

आम लोगों के लिए
दवाइयों की किताब

ISBN: 978-93-81300-38-1
पृष्ठ संख्या: 608
आकार: 7" X 9.5"
लोकॉस्ट, वड़ोदरा के साथ सह-प्रकाशन

पिटारा

Eklavya's one-stop education store

पिटारा किताबों का, पिटारा खेलों का, पिटारा सोच का,
पिटारा कुछ करने-गढ़ने का...
बच्चों और बड़ों के लिए।

याद है ना बचपन में एक जादुई बक्सा हम सबका पसन्दीदा होता था। जिसमें होता था सबसे बेशकीमती खज़ाना... कुछ कंकड़-पत्थर, सूखे हुए पत्ते, खाली माचिस की डिबिया और भी कुछ-कुछ। पिटारा भी एक ऐसा ही जादुई बक्सा है जिसमें बच्चे और बड़ों के लिए जीवन का खज़ाना भरा हुआ है। एक बार पिटारा में आकर तो देखिए, आप भी पिटारा से उतना ही लगाव महसूस करेंगे जितना बचपन में आपको उस जादुई बक्से से था।

पिटारा के खज़ाने में है सीखने की खूब सारी सामग्री, जैसे किताबें, चार्ट, पोस्टर, खिलौने, खेल और पहेलियाँ। साथ ही पिटारा वर्कशॉप और कैम्प के ज़रिए बच्चों और शिक्षकों के लिए गतिविधियाँ भी संचालित करता है। पिटारा शैक्षणिक मुद्दों पर चर्चा और बहस का भी एक केन्द्र है।

सभी तरह की शैक्षिक सामग्री एक ही जगह उपलब्ध करवाना ही पिटारा का प्रमुख उद्देश्य है।

पिटारा मुख्यधारा के प्रकाशकों और अन्य अल्प-परिचित प्रकाशकों एवं एजेंसियों के नवाचारी शैक्षिक सामग्री का भण्डार है। जिनका चयन बेहद सावधानी-पूर्वक किया जाता है। जो हम पढ़ते हैं वह हमारे साथ हमेशा रहता है। इसलिए हम यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि किताबों और सीखने की सामग्री की दूर तक व्यापक पहुँच हो और जो भी पिटारा में आए वो ताउम्र किताबों का दोस्त बना रहे।

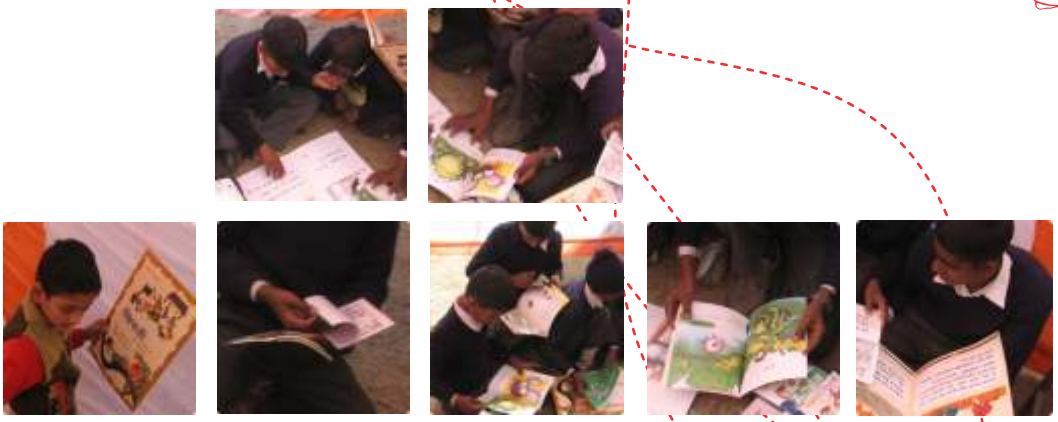

पिटारा - बाल साहित्य एवं गतिविधि केन्द्र

बाल साहित्य एवं गतिविधि केन्द्र के रूप में पिटारा की शुरुआत भोपाल से हुई और अब पिटारा इंदौर, उदयपुर, फैज़ाबाद, कानपुर, दुर्ग, सूरत, पटना, वर्धा, कुरूक्षेत्र और कई और जगह पहुँच गया है। पिटारा दूसरे समूहों और संस्थाओं के साथ मिलकर हिन्दी भाषी क्षेत्रों में पाठकों तक अच्छी किताबें पहुँचाने के लिए नेटवर्क विकसित करने का प्रयास कर रहा है।

पिटारा की दुनिया

पिटारा स्कूलों, शैक्षिक संस्थाओं, कार्यकर्ताओं के लिए किताबों, खिलौनों और अन्य शैक्षिक सामग्री का मुख्य स्रोत है। पिटारा में तीन तरह की सामग्री उपलब्ध होती है:

- *एकलव्य के प्रकाशन, जिसमें शामिल हैं एकलव्य द्वारा प्रकाशित किताबें और तीन पत्रिकाएँ - चकमक, संदर्भ और स्रोत।*

- *मुख्यधारा के प्रकाशक, जैसे नेशनल बुक ट्रस्ट, चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, राजकमल प्रकाशन, ग्रंथशिल्पी, रत्न सागर, नवनीत, तूलिका आदि का साहित्य।*

- *विभिन्न संस्थाओं द्वारा विकसित सामग्री (जिनका वितरण नेटवर्क है या नहीं)। इनमें शामिल हैं होमी भाभा साइंस सेंटर, सेंटर फॉर इंवायरमेंट एजुकेशन, वॉलंटरी हेल्थ एसोसिएशन ऑफ इंडिया, शिशुमिलाप, सहज, लोकॉस्ट, समावेश, नवनिर्मिति, कॉमेट मीडिया फाउंडेशन, जोड़ो ज्ञान, भारत ज्ञान विज्ञान समिति, विज्ञान प्रसार, मॉन्टेसरी बाल शिक्षण समिति, इट्टीकोप्पका टॉयज़, तथापि ट्रस्ट, बापू ट्रस्ट, राजस्थान पी.पी.एच., सहमत, आइडियल, द ऐंट, निरन्तर, जागोरी, बुक्स फॉर चेंज, सेंटर फॉर लर्निंग रिसोर्सेज़, नवयान आदि।*

पिटारा, भोपाल

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर
बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः 0755-255 0976, 267 1017
फैक्सः 0755-255 1108
pitara@eklavya.in

पिटारा, पटना

एकलव्य
विश्वकर्मा हाउस,
होटल ललिता के पीछे,
बोरिंग कैनाल रोड
पटना - 800 001 (बिहार)

पिटारा, इन्दौर

एकलव्य
61, बैराठी कॉलोनी नं. 2,
पो. - खातीवाला टैंक,
इन्दौर - 452 014 (म.प्र.)
फोनः 0731-2465 009,
+91 99811 04240
indore@eklavya.in

पिटारा, सागर

यशोदा वर्मा, द्वारा - मनीष वर्मा
कैलाश अपार्टमेंट के सामने,
विजय नगर, राजाखेड़ी, मरकोरिया,
सागर (म.प्र.) 470 004
फोनः +91 9300 282102

पिटारा, मुम्बई

समीर कपाड़िया
द्वारा - क्रिएटिव लर्निंग एड्स
204, ओरियन्ट हाउस,
229/231, सैमुएल स्ट्रीट मस्जिद
मुम्बई - 400 003
फोनः +91 8196 77361

पिटारा, उत्तराखण्ड

रमाशंकर नेनवाल
उत्तर उजाला ऑफिस के पास
चौघन पाटा, माल रोड, अल्मोड़ा
उत्तराखण्ड - 263 601
फोनः +91 9358 932048

पिटारा, दुर्ग

ममता गोवर्धन
द्वारा - बुक हाइव, गोवर्धन परिसर
गुरुद्वारा स्टेशन रोड के पास,
दुर्ग - 491 001
फोनः +91 9425 292064

पिटारा, उदयपुर

द्वारा - विद्या भवन सोसायटी
डॉ. मोहनसिंह मेहता मार्ग,
फतेहपुरा, उदयपुर
राजस्थान - 130 001
फोनः 0294-2451497,
+91 99509 12525

पिटारा, जोधपुर

डॉ. अनिता कोठारी
द्वारा - कुलदीप कोठारी
पोटा B-II रोड,
राजस्थान पत्रिका के पास,
जोधपुर नागरिक बैंक के सामने,
पोटा, जोधपुर (राजस्थान) - 342 006
फोनः 0291-2546359,
+91 97724 34111
anitakothari07@gmail.com

पिटारा, फैज़ाबाद

द्वारा - श्रीमती मंजुला झुनझुनवाला
विष्णुपुरी, सिविल लाइन्स
फैज़ाबाद (उ.प्र.) 224 001
फोनः +91 93354 50588,
05278- 224478

पिटारा, गुजरात

द्वारा - आर्च
सिद्धी पाइप फैक्ट्री के सामने,
नागारिया धर्मपुर,
ज़िला - वलसाड़,
गुजरात - 396 050
फोनः +91 98791 78223

पिटारा, वर्धा

द्वारा - सुषमा शर्मा
प्रिंसिपल, आनन्द निकेतन
नई तालीम समिति,
सेवाग्राम आश्रम,
पोस्ट - सेवाग्राम,
ज़िला - वर्धा
महाराष्ट्र - 442 102
फोनः +91 98810 18188

पिटारा, कानपुर

दीनदयाल सिंह
135-यू, नानकारी
आई.आई.टी., कानपुर
उत्तरप्रदेश - 208 016
फोनः +91 97954 22228

पिटारा, उत्तराखण्ड

जया मिश्रा
कुमाऊँ सेवा समिति
द्वारा - यासीन अंसारी
सिद्धकुल रोड, सितारगंज
यू.एस. नगर, उत्तराखण्ड
फोनः +91 94111 68213,
+91 98374 72786

पिटारा, देहरादून

शिक्षा भारती
बायपास लिंक रोड
नेहरू कॉलोनी, देहरादून,
उत्तरांचल - 248 001
फोनः 0135-2669250, 3245700
shikshabharti_uk@yahoo.in

पिटारा, इलाहाबाद

द्वारा - मुहिम,
ए-89, मेहदौरी कॉलोनी, तेलिआरगंज,
इलाहाबाद - 211 004 (उ.प्र.)
फोनः +91 94158 28093

पिटारा, दिल्ली

जोड़ो ज्ञान रिसोर्स सेंटर
28-ए/1, जिया सराय
हौज़ खास, आई.आई.टी. गेट के पास,
नई दिल्ली - 110 016
फोनः 011-27102820, 27100104,
+91 98730 84472